Delhi Postal Regd. No. DL © -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 44 • 7-13 अगस्त, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 05-8-2023 • पेज: 16 • ₹10

भिक्षु वाणी

अज्ञानी लोग अधर्म के कार्य को धर्म में और धर्म के कार्य को अधर्म डाल देते हैं। वे दोनों ओर से बंध जाते हैं, उनकी दुर्गति होती है।

तेरापंथ किशोर मण्डल के १८वें त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन 'नवोन्मेष- एलिवेटिंग यू' का भव्य आयोजन

किशोरों की शक्ति का अच्छा उपयोग होता रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

नन्दनवन-मुम्बई, २९ जुलाई २०२३

आज अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित तेरापंथ किशोर मंडल के त्रिदिवसीय १८वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दूसरे दिन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित मंचीय कार्यक्रम में पूज्य सन्निधि में उपस्थित किशोरों को प्रेरणा प्रदान करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि जीवन में कुछ विशेष बनने और करने की उग्र इच्छा होती है। वैसा पुरुषार्थ होता है तो बनने की संभावना हो सकती है। पुरुषार्थ एक करणीय तत्त्व है, जो विवेक और सम्यक्‌युक्त हो तो आदमी सिद्धि को प्राप्त कर सकता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अंतर्गत किशोर मंडल किशोरों का अच्छा संगठन है। किशोरों में भी त्याग, संयम, सेवा की भावना है, यह अच्छी बात है। जो किशोर इससे जुड़े हुए हैं, एक नियंत्रण में है, अच्छी प्रगति करते हैं, यह उनके जीवन निर्माण की दृष्टि से अच्छी बात हो सकती है। आधुनिक उपकरणों से जुड़े लोगों में आध्यात्मिकता होना भी आवश्यक है वरना भौतिकता गलत रास्ते पर ले जा सकती है। किशोरों में अच्छे संस्कार पुष्ट हों। अच्छी पीढ़ी का निर्माण होने से धर्मसंघ की अच्छी सेवा कर सकते हैं।

आचार्यश्री भिक्षु द्वारा रचित पुराने चार गीत हैं उनको याद करने का प्रयास करें। इनसे गहरा तात्त्विक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। मुनि दिनेश जी, मुनि योगेश जी इनको समझाने का प्रयास करें। किशोरों में उत्साह-मैत्री की भावना रहे, निडरता रहे। किशोरों का लंबा जीवन होता है, समस्याएं आ जायें तो शांति से उनका निवारण हो। जीवन में संतुलन-प्रसन्नता रहे। किशोरों की शक्ति का अच्छा उपयोग होता रहे। अभातेयुप द्वारा किशोरों का निर्माण कर उन्हें कुछ देने का प्रयास किया जा रहा है। किशोरों का अच्छा विकास होता रहे साथ में धार्मिक संस्कार भी पुष्ट होते रहें।

स्थूल हिंसा से बचने का हो प्रयास

साधना के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के आठवें शतक में कहा गया है- आठ कर्मों में पांचवा कर्म आयुष्य कर्म है। आयुष्य चार प्रकार का होता है- नरक आयुष्य, तिर्यन्च आयुष्य, मनुष्य आयुष्य और देव आयुष्य। जीव के नरक गति के आयुष्य बंध के प्रमुख पांच कारण बताये गये हैं- महाआरंभ, महापरिग्रह, मांसाहार, पंचेन्द्रिय वध एवं नेरियक आयुष्य नाम कर्म का उदय। हमारी चेतना में विकृतियां हो जाती है। हिंसा और परिग्रह जब सघनता को प्राप्त होते हैं तब वे नरक आयुष्य बंध के कारण बन सकते हैं। जहां बहुत ज्यादा जीवों का घात होता है, आवेशवष व्यक्ति पंचेंद्रिय प्राणियों को मार देता है, यह सब हिंसा के रूप है। शिकार कर या गलत कार्य कर खुशी न मनाएं बल्कि उसके लिए खेद-प्रायश्चित करें। अहिंसा परम धर्म है। स्थूल हिंसा से बचने का प्रयास करें। मांसाहार परिवर्जनीय है। शाकाहार में जीव हिंसा तो होती है पर मांसाहार में तो पंचेन्द्रिय जीव का वध होता है। जहां मांसाहार होता है, वहां से दूर रहें। अनावश्यक संग्रह न हो। बच्चों को पढ़ने के लिये हॉस्टल आदि में बाहर भेजते समय ध्यान रखना चाहिये कि वहां नॉनवेज खाना तो नहीं बनता है। ऐसी जगह भेजना से बचना चाहिए। जहां मांसाहार शाकाहार साथ में बनता हो वहां खाने से ही बचना चाहिए। परिग्रह के प्रति आसक्त न रहें। जमींकंद को जितना हो सके, छोड़ने का प्रयास करें। रात्रि भोजन से बचें। इससे हिंसा का अल्पीकरण हो सकता है। भ्रूण हत्या से बचें तो पाप कर्म कम लगेंगे। यह सभी हिंसा के अल्पीकरण के माध्यम हैं, ताकि पाप कर्मों के बंधन से कुछ बचाव हो सके। परम पावन ने कालूयशोविलास का सुमधुर वाचन कराते हुए पूज्य कालूगणी के सान्निध्य में हो रहे दीक्षा समारोह में आये पुलिस अधिकारियों द्वारा की गई जांच के प्रसंग को व्याख्यायित किया।

पूज्यवर ने मासखमण की तपस्या करने वाले चंद्रप्रकाश मेहता को २६, दिशांत ढ़ेलड़िया को २८, नेहा को २६, सुशीला भटेरा को २६, पुष्पा देवी कोठारी को २८, पुष्पा सोलंकी को २६, विकास हिरण को २६ एवं कृष्णा सेमलानी को २६ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। मासखमण के अतिरिक्त अन्य तपस्वियों- रमेश सूर्या, कान्ता राठौड, हर्षा लोढ़ा, हीरालाल संकलेचा, लीला धाकड़, बालचंद कोठारी को धारणानुसार प्रत्याख्यान करवाये।

मुख्य मुनिश्री ने फरमाया कि किशोरावस्था में किशोरों को आगे के जीवन का निर्णय करना होता है। अध्ययन, आजीविका के साथ कुछ हलुकर्मी किशोर आध्यात्मिक जीवन की ओर आगे बढ़ते रहें। भविष्य निर्माण के साथ चरित्र का भी निर्माण हो। सतत जागरूक रहें। स्वयं के विवेक को जागृत रखें। विवेकी व्यक्तित्वों का मार्गदर्शन भी आत्मसात करें, तभी जीवन में नवोन्मेष घटित हो सकेगा।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा एवं तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय संयोजक विशाल पितलिया ने अपनी भावना व्यक्त की। किशोरों ने १० दान की ढ़ाल का सुमधुर संगान किया। किशोर मंडल थीम सॉन्ग की भी प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

(किशोर मंडल के १८वें राष्ट्रीय अधिवेशन का विस्तृत विवरण पढ़ें आगामी अंक में।)

व्यक्ति क्रोध से अपने आप को बचाने का प्रयास करे। जो कार्य प्रेम और शांति से हो सकता है, उसके लिए क्रोध क्यों करें?
-आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार समारोह का आयोजन

ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से व्यक्ति साहित्यकार बन सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन-मुंबई
२७ जुलाई २०२३

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत जैन विश्व भारती द्वारा संचालित 'आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार' के संदर्भ में प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि हमारे जीवन में दो तत्व है- आत्मा और शरीर। आत्मा शाश्वत व शरीर अशाश्वत है। आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन आदि गुण होते हैं। घाति कर्म हल्के पड़ने पर यह गुण प्रकट हो जाते हैं। साहित्य शब्द संसार का तत्व है। शब्द पुद्‌गल होते हुए भी सशक्त माध्यम है। शब्द अर्थ के संवाहक होते हैं। इसलिए हमारा शब्दकोष समृद्ध हो। व्याकरण का ज्ञान न हो तो व्यक्ति भाषा जगत में अंधा है। शब्द कोष न हो तो वह व्यक्ति बहरा है, साहित्य का जिसे ज्ञान नहीं है, वह पंगु है, जिसके पास तार्किक शक्ति नहीं है, वह आदमी मूक है। यह साहित्य जगत की भाषा है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से व्यक्ति साहित्यकार बन सकता है। शब्दों की दुनिया में रहने वाले शब्दातीत जीवन में जीने का प्रयास करें। भीतर का ज्ञान अशब्द ही साधना से प्राप्त हो सकता है।

परम पूज्य आचार्य तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का विराट साहित्य उपलब्ध है। उन्होंने जैन आगमों के संपादन के कार्य को आगे बढ़ाया था। जैन विश्व भारती ऐसे साहित्य को प्रकाशित करने में अपना सहयोग देती है, ज्ञान के प्रचार, प्रसार और प्रकाश का कार्य कर रही है। जो सारस्वत साधना के प्रति समर्पित हो जाता है, वह साहित्य जगत को कुछ दे सकता है। सुराणा परिवार में भी धर्म के संस्कार पुष्ट होते रहें। दोनों पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं में भी ज्ञान का विकास होता रहे, वे अध्यात्म के क्षेत्र में भी विकास करते रहें।

अनुकम्पाशीलता का भाव सातवेदनीय बंध का कारण है

मुख्य प्रवचन के अंतर्गत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने ज्ञान की ज्योति जलाते हुए फरमाया कि भगवती आगम के आठवें शतक में कर्मों का बंध किस कारण से होता है। वेदनीय कर्मों के संदर्भ में बताया गया कि सातवेदनीय एवं असातवेदनीय कर्म के बंध और उदय के मूल में अनुकंपा है।

प्राणी दुःख भी पाता है और सुख भी पाता है। जिस आदमी का शरीर सक्षम हो, स्वस्थ हो, चाहे जो काम करवालो, इतनी अनुकूलता होने का कारण सात वेदनीय कर्म के उदय का योग है। इसका कारण है कि उसके पीछे अनुकंपा-दया है। प्राण, भूत, जीव और सत्व के प्राणियों के प्रति अनुकंपा की भावना रखने वाला, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं देने वाला, किसी की शांति को भंग नहीं करने वाला सातवेदनीय कर्म का बंध करता है। कुछ व्यक्तियों के छोटी उम्र में ही बिमारियां हो जाती है, कई शरीर से दुर्बल होते हैं। ये सब असातवेदनीय कर्म के उदय से होती है। इसका कारण है कि प्राण, भूत, जीव और सत्व की अनुकंपा न करना, शारीरिक परिताप देना। इरादतन किसी को दुःखी न करें। भले इस जीवन में बुरा काम न किया हो पर पिछले जीवन में जो किया है, उसका फल वर्तमान में भोगना पड़ सकता है। अनुकम्पाशीलता का भाव सातवेदनीय बंध का कारण है। निराकम्पाशीलता, निष्ठुरता का भाव असातवेदनीय कर्म के बंध का कारण है। अतः बिना कारण किसी प्राणी को कष्ट देने का प्रयास न करें। किसी भी प्राणी की शांति, सुविधा में बाधा नहीं डालना चाहिये।

कालूयशोविलास की विवेचना करते हुए महामनीषी ने उदयपुर में पूज्य कालूगणी के कर कमलों के द्वारा १५ वैरागी-वैरागण के दीक्षा महोत्सव के प्रसंग को विस्तार से बताया। धर्म की जय, पाप का क्षय होता है।

साध्वीवर्याजी ने फरमाया कि आध्यात्मिक शक्ति पर जिसकी दृष्टि टिक जाती है, वह भौतिक सुखों की तरफ आकर्षित नहीं होता। भौतिक सुख अशाश्वत है। इन्द्रिय विषयों से काम भोग की कामना हो सकती है। काम भोग की लोलुपता से प्राणी कामान्ध हो जाता है। हम आसक्ति से दूर रहें। राग-द्वेष की भावना विकृति पैदा करती है। काम की इच्छा मात्र करने वाला दुर्गति को प्राप्त हो सकता है।

तपस्या के प्रत्याख्यान

पूज्यवर ने तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। रमेश्चा गुंदेचा, भारती गुंदेचा ने सजोड़े व पुष्पा सोलंकी, किरण बड़ाला, सीमा खटेड़, सपना चपलोत, रमेश चपलोत, सुरेश राठौड़, हीरा देवी संकलेचा, संतोष लोढ़ा, मीना छाजेड़, रेखा सांखला, सुनीता मेहता, रेखा मेहता व रंजना बड़ाला ने तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा ने पुरस्कार व पुरस्कार प्राप्त -कर्ताओं का परिचय दिया। वर्ष २०२० का आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार साहित्यकार डॉ नरेश शांडिल्य, दिल्ली एवं वर्ष २०२१ का आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार डॉ हरीश नवल, दिल्ली को पूज्यवर की सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा सूरजमल सुराणा चेरीटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी के प्रायोजकीय सहयोग से प्रदान किये गये।

डॉ नरेश शांडिल्य एवं डॉ हरीश नवल ने पूज्यवर के प्रति कृतज्ञता के भाव एवं जैन विश्व भारती व प्रायोजक परिवार के प्रति धन्यवाद के भाव व्यक्त किये। प्रायोजक परिवार की ओर से सिद्धार्थ सुराणा ने पूज्यवर के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट किये। कवि राजेश चेतन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

व्यक्ति पाप तो करता है, किंतु पापी कहलाना नहीं चाहता। गलत काम करके भी सुनाम चाहता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

झूठ-कपट से बचने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

नन्दनवन-मुम्बई
३० जुलाई २०२३

युवामनीषी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने निर्ग्रन्थ वाणी का रसास्वादन करवाते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के आठवें शतक में कहा गया है- आयुष्य कर्म के संदर्भ में इसमें प्रकरण चल रहा है। नरक आयुष्य बंध के कारण पहले बताये गये हैं। तिर्यन्च गति आयुष्य बंध के मुख्य कारण माया, गूढ़ माया, असत्य वचन, झूठ-कपट को बताया गया है। झूठ और कपट का गहरा जोड़ा है। साधु के तो तीन करण, तीन योग से झूठा बोलने का त्याग होता है। गृहस्थ के झूठ-कपट का काम पड़ सकता है पर निष्ठा व मजबूत मनोबल है, तो वह काफी झूठ से बच भी सकता है। न्याय प्राप्ति के लिए झूठ का सहारा न लें। किसी पर झूठा आरोप लगाना पाप है। असत्य बोलने के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं पर यथासंभव झूठ से बचने का प्रयास रहना चाहिये। व्रती श्रावक को एक सीमा तक झूठ का परिवर्जन कराया जाता है। गुस्से, लोभ, भय, हंसी, मजाक से व्यक्ति झूठ बोल सकता है। व्यवसाय में तोल-माप में गड़बड़ी न करें। अनैकिता न करें। दो शब्द है- व्रत और वित्त। व्रत यानि चरित्र-ईमानदारी की सुरक्षा करें। वित्त-धन तो आता-जाता रहता है। चरित्र से हारने वाला पाप का बंध कर लेता है।

गृहस्थों के व्यापार, लेनेदेन में शुद्धता रहे। धार्मिक संस्थाओं में तो विशेष नैतिकता का प्रभाव रहना चाहिये। नियम का अतिक्रमण न हो, ताकि पाप कर्म के बन्ध व तिर्यन्च गति के बंध से बच सकें। यह शास्त्र हमें सिद्धान्त देने वाले होते हैं। आर्श वाणी से हमें आत्मिक लाभ हो सकते हैं। कदम-कदम बढ़ेंगे तो आगे पहुंच सकेंगे। आर्श वाणी सुनकर जीवन में उतारने का प्रयास करें। प्रवचन सुनने से पाप कर्म से उतने समय तक बचेंगे। ध्यान से सुनेंगे तो ज्ञान प्राप्त होगा और समस्या का समाधान भी मिल सकता है। सुनते-सुनते आदमी त्याग के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। हेय को छोड़ेगा, उपादेय को ग्रहण करेगा।

'मैं व्रती हूं' कार्यशाला का आयोजन

'मैं व्रती हूं' कार्यशाला के संदर्भ में पूज्यवर ने फरमाया कि बारह व्रती का मतलब है कि धर्म जीवन में आया है। व्रतों को सुनो, जानो और स्वीकार करो। एक आचरणात्मक धर्म है, एक साधनामय-उपासनामय धर्म है। अंतिम मनोरथ है -संलेखना। आध्यात्मिक आराधना करते-करते अनशन में प्राण छूटे। व्रती श्रावक होना जीवन में एक उपलब्धि है। यह आध्यात्मिक पूंजी अर्जन करें, जो आगे भी काम आ सकती है। इस पूंजी को वृद्धिंगत करने का प्रयास करें।

पूज्यवर ने साध्वी विशालयशाजी एवं साध्वी विशालप्रभाजी को आज २८ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। पूज्यवर ने मासखमण की तपस्या के क्रम में महेन्द भरसारिया को ३१ एवं नेहा रागी, गणपतलाल धाकड़, सुशीला नाहटा, मनोहरलाल चावड़िया, डॉ दीपक कावड़िया, देवेन्द्र मेहता, चेतना बावरिया, विनिता बरड़िया, कनिष्का खटेड़, दिनेश श्रीश्रीमाल, विशाल सेमलानी को ३०, रेखा धोका, पारस मेहता, पुष्पा कोठारी, बसंती चोरड़िया, राजेन्द्र दूगड़, मनोज ओस्तवाल, केशर कोठारी को २६ एवं सपना कोठारी, अरविन्द कोठारी को २८ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। अन्य तपस्याओं के क्रम में लता भरसारिया, अरिहंत भरसारिया, राजुल सांखला, विमला खीमेसरा, रेखा मेहता को उनके तप के अनुसार प्रत्याख्यान करवाये।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने फरमाया कि जैन धर्म में दो प्रकार के धर्म आगार धर्म और अणगार धर्म बताये गये हैं। दोनों का लक्ष्य एक ही है, पर गति में अन्तर है। श्रावक आनन्द बहुत सौभाग्यशाली था, जिसने भगवान महावीर से बारहव्रत स्वीकार किये थे। हमारे पूज्य आचार्य भी प्रयास कर बारहव्रती श्रावक बनाते हैं। प्रवृत्ति और अविरति से बंधन होता है। व्रत धर्म है। श्रमणोपासक बनने से जीवन में एक सीमा आ जाती है। श्रमणोपासक त्याग की तरफ आगे बढ़ रहे हैं।

साध्वीवर्याजी ने फरमाया कि व्यक्ति आसक्ति रूपी गाय से बंधा है। इसलिए वह परिग्रह से बंधा है। पदार्थ के प्रति जुड़ने वाली इच्छा, संग्रह और मूर्छा है, वह परिग्रह है। हम इनका सीमाकरण करें, इन पर नियंत्रण करें। अपरिग्रह के लिए अर्जन में नैतिकता हो, साधन शुद्धि हो। महारम्भ का काम न करें।

मुंबई की तेयुप शाखाओं का शपथ ग्रहण समारोह 'तिलकोत्सव'

पूज्यवर की सन्निधि में एवं अभातेयुप के निर्देशन में समस्त मुंबई की तेयुप शाखाओं का शपथ ग्रहण समारोह 'तिलकोत्सव' आयोजित हुआ। मुनि दिनेशकुमारजी, अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने युवाओं को पावन प्रेरणा प्रदान की। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य के साथ नवमनोनीत अध्यक्षगण एवं उनकी टीम को शपथ ग्रहण करवायी एवं उनके सफल कार्यकाल की मंगल कामना की। महामंत्री पवन मांडोत ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। उपस्थित युवकों को प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि युवक सामायिक, चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा आदि करने का प्रयास करें। नशा मुक्त रहें। परिवार में अच्छे संस्कार आये। चारित्रात्माओं के सान्निध्य से धार्मिक-आध्यात्मिक लाभ मिल सकता है। तप साधना भी चले। किशोरों का भी ध्यान रखें। किशोरों में भी जागरुकता रहे। शपथ अपने आप को संकल्पित करने का उपक्रम है। अभातेयुप, तेयुप, किशोर धर्मसंघ की अच्छी पौध है। समाज की गरिमा को बढ़ाने वाले हैं। खूब अच्छा विकास हो, मंगलकामना।

मुनि शांतिप्रिय जी एक वैरागी संत थे

भीनासर

मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने मुनि शांतिप्रिय जी की स्मृति सभा में कहा कि जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है–अनशनपूर्वक मृत्यु का वरण। वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है, जिसे अनशन करने का अवसर मिलता है। बिना क्षयोपशम के न संयम-साधुपन आता है और न ही संथारा-संलेखना। मुनि शांतिप्रिय जी, जिन्हें गुरुओं की महान अनुकंपा से अंतिम वय में संयम जीवन के साथ संथारा भी आया। संथारा भी पचपन दिनों का आया।

मुनि शांतिप्रिय जी एक वैरागी संत थे। संयम जीवन का सजगता से पालन करते थे। संघ व संघपति के प्रति उनके मन में गहरी निष्ठा का भाव था। श्रावक जीवन में उपासक रहे। प्रारंभ से ही उन्हें प्रवचन देने का शौक था। वाणी उनकी बुलंद थी। दीक्षित होने के बाद मेवाड़ आदि क्षेत्रों में काफी रहे और धर्मसंघ की प्रभावना में अपना योगदान दिया। तपस्या भी करते रहते थे।

मुनि पारस कुमार जी का अच्छा योग मिला और आचार्यप्रवर महाश्रमणजी की कृपा से अनशन कर जीवन का उपसंहार किया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी को उनकी सेवा का अच्छा लाभ मिला। मैं उनके जीवन के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूँ कि उनकी आत्मा शीघ्र ही मोक्षश्री का वरण करे। इस अवसर पर मुनि प्रबोध कुमार जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। चार लोगस्स के ध्यान के साथ सभी श्रावक-श्राविकाओं ने मुनि शांतिप्रिय के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में सम्यक दर्शन कार्यशाला -2023 के बैनर का विमोचन

नन्दनवन-मुम्बई, २९ जुलाई २०२३

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद व समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित सम्यक दर्शन कार्यशाला के बैनर का अनावरण मुम्बई नंदनवन में परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में किया गया, पूज्यप्रवर ने सम्पूर्ण श्रावक समाज से आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की कृति शरीर और आत्मा पुस्तक पर आधारित कार्यशाला हेतु आशीर्वाद व प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद और समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती द्वारा 'शरीर और आत्मा' पुस्तक पर कार्यशाला आयोजित हो रही है। 'शरीर और आत्मा' आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की पुस्तक है, जो रायपसेणियं आगम पर आधारित है। अच्छी जानकारी देने वाली पुस्तक हो सकती है। कार्यशाला अच्छी चले, इस पर जिज्ञासा समाधान का क्रम यथाअपेक्षा चले।

इस अवसर पर अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा, महामंत्री पवन मांडोत व पदाधिकारी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, मंत्री सलिल लोढा व पदाधिकारी, मुम्बई चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ उपस्थित थे। कार्यशाला ७ अगस्त से २१ अगस्त २०२३ तक पूरे देशभर में आयोजित की जा रही है। परीक्षा १० सितंबर २०२३ को संबोधि एप्लिकेशन के माध्यम से ऑनलाईन होगी।

मासखमण तप अभिनन्दन समारोह का आयोजन

राजनगर

आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में कृष्णा चपलोत के ३१ दिन के मासखमण तप का अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। डॉ साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि कृष्णा चपलोत ने प्रज्ञा दीप जलाया है। चपलोत परिवार का मन हरसाया है। तप दो अक्षर का है, एक छोटा-सा शब्द है पर इसमें अष्टकर्म क्षय करने की ताकत है। पैसा सुविधा दे सकता है लेकिन मानसिक शांति नहीं, यह तपोत्सव मानसिक शांति का बेहतरीन तरीका है। जीवनचक्र को चार्ज करने के लिए एक चार्जर चाहिए। त्याग, तप, संयम से बढ़कर कोई चार्जर नहीं। मार्बल और ग्रेनाईट की धरती पर पहला मासखमण राजनगर, भिक्षु बोधि स्थल राजसमंद जिले का कीर्तिमान बन गया है।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्रीजी के नमस्कार महामंत्र से हुई। साध्वीवृंद ने समूह गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल और कृष्णा चपलोत की सखियों ने अपनी मधुर स्वर लहरियों के साथ तपस्विनी का अनुमोदन किया। सभाध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष भूपेश धोका, पूर्व अध्यक्ष सुरेश कावड़िया, मुख्य वक्ता अणुव्रत प्रवक्ता महेन्द्र कर्णावट एवं मुख्य अतिथि देवेन्द्रकुमार कच्छारा ने तप अनुमोदना में अपने विचार प्रस्तुत किए।

कृष्णा चपलोत के पारिवारिकजन नवीन श्रीश्रीमाल, महावीर सूर्या, गणपत चपलोत, दर्शना चपलोत, हर्षिता चपलोत, करिश्मा चपलोत, नन्हे कलाकार आरव व काव्य चपलोत इन सभी ने गीत, वक्तव्य, कविता के माध्यम से तपस्या की अनुमोदना की। तेरापंथ सभा के कार्यवाह अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा ने तप अभिनंदन पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन मंजू बड़ोला और आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष अनिल बड़ोला ने किया।

अभातेयुप के तत्वावधान में स्थानीय शाखा परिषदों द्वारा मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

चेन्नई

तेयुप चेन्नई की आयोजना में शासनश्री साध्वी शिवमालाजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ सभा भवन ट्रिप्लीकेन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र से हुआ। सहमंत्री नवीन बोहरा ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। उपाध्यक्ष संदीप मुथा ने स्वागत भाषण दिया।

मंगल उद्‌बोधन प्रदान करते हुए साध्वी शिवमालाजी ने कहा कि बच्चे समाज, देश की मूल्यवान धरोहर है। बच्चे विद्या, विनय, विवेक का जिनालय हैं, ऊंची उड़ान भरने के लिए हिमालय है। बच्चों को जीवन में विनम्र, दयालु, समर्पित बनना चाहिए। ज्ञानप्राप्ति के साथ सत् संस्कार का समावेश होना चाहिए। जैनत्व के संस्कारों के अनुकूल खानपान होना चाहिए। अच्छे दोस्तों की संगति होनी चाहिए। माता-पिता, गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए। साध्वीश्री ने बच्चों को मंत्र दीक्षा अंगीकार करवाते हुए कहा कि प्रतिदिन सुबह जल्दी उठने के साथ कम से कम २१ बार नमस्कार महामंत्र का स्मरण करना चाहिए।

साध्वी अर्हम्‌प्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से बच्चों को प्रेरणा प्रदान की। पल्लावरम्, ट्रिप्लीकेन, क्रोसरोड़ इत्यादि ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं ने सहभागिता की। ज्ञानशाला सहप्रभारी राजेश सांड़ ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजक हरीश भण्डारी ने और आभार ज्ञापन सह संयोजक विशाल हिरण ने किया। कार्यक्रम में तेयुप संगठन मंत्री नितेश मरलेचा, एटीडीसी संयोजक स्नेहदीप बांठिया, नवीन मुणोत, दीपक श्रीश्रीमाल के साथ तेयुप कार्यकर्ता एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीगण सहित गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

पाली

शहर के तेरापंथ भवन में बालक बालिकाओं को संस्कारित करने के लिए साध्वी प्रमोदश्रीजी के सानिध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्रीजी ने उद्‌बोधन देते हुए कहा कि बालकों को बचपन से ही धार्मिक संस्कार दिए जाएं तो उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। बच्चों को प्रतिदिन २७ नवकार मंत्र की माला फेरते हुए नशा मुक्त रहने की प्रेरणा दी गई। उन्हें बड़ों का आदर करने एवं अपशब्द नहीं बोलने की शिक्षा भी दी गई। संतुलित आहार करने का संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने किया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। तेरापंथी सभा से सज्जनराज बांठिया, ज्ञानशाला प्रभारी हेमराज सुंदेचा, बसंत सोनी मंडिया ने बच्चों में अध्यात्म के सुसंस्कारों हेतु शुभकामनाएं दी। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष सुरेश सेठिया, मंत्री पीयूष चौपड़ा, उपाध्यक्ष आनंद संकलेचा आदि सहित युवा साथियों के सहयोग से कार्यक्रम सफल हुआ। श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व-भेरूलाल संखलेचा-रेशमी देवी संखलेचा परिवार द्वारा बालकों को मंत्र दीक्षा किट भेंट किये गये।

हासन

तेरापंथ युवक परिषद के द्वारा मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन में आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में ४० बच्चों ने भाग लिया। नम्रता सुराणा ने नमस्कार महामंत्र के महत्व को एक कहानी के माध्यम से समझाया। ममता कोठारी ने संचालन किया एवं मंत्र दीक्षा का संकल्प दिलाया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेंद्र तातेड, महिला मंडल अध्यक्षा कौशल्या तातेड़, मंत्री पिंकी गुलगुलिया, तेयुप अध्यक्ष गौरव गुलगुलिया, मंत्री विकास कोठारी एवं सर्व समाज की उपस्थिति रही।

गांधीनगर-बेंगलुरू

मुनि हिमांशुकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरू, राजाजीनगर, हनुमंतनगर, यशवंतपुर एवं टी दासरहल्ली के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ भवन गांधीनगर में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। तेयुप बेंगलुरू अध्यक्ष रजत बैद ने सभी का स्वागत किया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने ज्ञानार्थियों को कहानी के माध्यम से गुस्सा नहीं करने की प्रेरणा दी। मुनि हेमंतकुमारजी ने मंत्र दीक्षा की व्याख्या करते हुए एक घटना के माध्यम से नमस्कार महामंत्र की महिमा का गुणगान किया। मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में ज्ञानार्थियों को मुनि हेमंतकुमारजी ने मंगल उद्‌बोधन प्रदान करते हुए मंत्र दीक्षा प्रदान की।

कार्यक्रम में अभातेयुप टीम के सदस्यगण, तेयुप राजाजी नगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना, तेयुप हनुमंतनगर अध्यक्ष अंकुश बैद, तेयुप यशवंतपुर अध्यक्ष जिगर मारू, तेरापंथ युवक परिषद् टी दासरहल्ली अध्यक्ष देवीलाल गांधी के साथ पांचों परिषदों के पदाधिकारीगण, सदस्य एवं ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं के साथ गणमान्य लोग उपस्थित थे। ज्ञानशाला से नीता गादिया ने आभार ज्ञापन किया।

इचलकरंजी

तेयुप इचलकरंजी द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ हुआ। तेयुप अध्यक्ष विनोद भंसाली ने अपने वक्तव्य में सभी का स्वागत किया एवं मंत्र दीक्षा के बारे में संक्षिप्त में जानकारी दी।

ज्ञानशाला संयोजिका भारतीदेवी संकलेचा ने मंत्र दीक्षा एवं ज्ञानशाला की उपयोगिता के बारे में विचार व्यक्त किये तथा ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा के संकल्प स्वीकार करवाये। ज्ञानार्थियों को त्रिपदी वंदना एवं गुरु वंदना करवाई गई। ज्ञानशाला प्रशिक्षका रजनीदेवी पारख ने सभी बच्चों को नमस्कार महामंत्र पर आधारित सुंदर कहानी सुनाई। कार्यक्रम की सुंदर आयोजना में संयोजक गौरव गिड़िया ने अच्छा श्रम किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार तेयुप मंत्री संतोष भंसाली ने किया।

फरीदाबाद

तेरापंथ भवन में मंत्र दीक्षा एवं तेरापंथ युवक परिषद की नवनिर्वाचित टीम का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ 'नमस्कार महामंत्र' के उच्चारण द्वारा हुआ। तेयुप के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। कार्यकारिणी सदस्य व संस्कारक जितेंद्र लुनिया द्वारा मंच संचालन किया गया। उपासिका व ज्ञानशाला प्रमुख प्रशिक्षिका मंजु लुनिया एवं सुशीला दूगड द्वारा ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा दिलवाई गई। मंत्र दीक्षा के पश्चात गौतम गोलछा को २०२३-२४ के कार्यकाल के लिए अध्यक्ष पद की शपथ निवर्तमान अध्यक्ष विवेक बैद व फरीदाबाद शाखा प्रभारी जतन श्यामसुखा द्वारा दिलवाई गई। इसके पश्चात गौतम गोलछा ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा कि उन्हें शपथ दिलवाई।

तेयुप के नवमनोनीत अध्यक्ष गौतम गोलछा व उनकी नवगठित कार्यकारिणी टीम के साथ-साथ तेरापंथ महिला मंडल की नवमनोनीत अध्यक्षा ललिता बैद व उनकी नवगठित कार्यकारिणी टीम का शपथ ग्रहण जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष गुलाब बैद, मंत्री संजीव बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष इंद्रचंद जैन, टीपीएफ़ नार्थ जोन अध्यक्ष विजय नाहटा, टीपीएफ फरीदाबाद अध्यक्ष राकेश सेठिया ,अभातेयुप सदस्य राजेश जैन व समाज के वरिष्ठ श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे।

अमराईवाड़ी

तेयुप, अमराईवाड़ी द्वारा मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम उपासिका संगीता देवी सिंघवी एवं सेजल मंडोत की उपस्थिति में हुआ। जिसमें ज्ञानशाला के करीबन ३५ बच्चों ने भाग लिया । कार्यक्रम की शुरुआत प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुई। ज्ञानशाला के बच्चों ने नमस्कार मंत्र का उच्चारण किया। तेयुप अध्यक्ष हितेश चपलोत ने स्वागत वक्तव्य और मंत्र दीक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने उत्साहवर्धन करते हुए ज्ञानशाला को ऐसे ही और कार्यक्रम करने की प्रेरणा दी। उपासिका सेजल मंडोत ने राजा श्रेणिक की नवकार मंत्र की कहानी बताई और उपासिका संगीता सिंघवी ने ज्ञानशाला के बच्चों को संकल्प ग्रहण करवाए। प्रशिक्षिका कोमल हिरण ने अपने भाव व्यक्त किये। तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड़ ने बच्चों को साधुवाद दिया। मंच संचालन मंत्र दीक्षा संयोजक अल्पेश हिरण ने किया और आभार ज्ञापन विपुल मंडोत ने किया।

सूरत

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन सिटी लाइट-सूरत में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजित हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी रश्मिप्रभाजी एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा निर्देशित अमरकुमार की नाटिका का मंचन हुआ, जिसमें नमस्कार महामंत्र के जप से चमत्कार घटित होने के बारे में बताया गया। साध्वी कल्पयशाजी ने मंत्रों की शक्ति के बारे में बताया। साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने ६ साल के ज्ञानशाला के बच्चों को मंत्र दीक्षा की शपथ दिलाई तथा सभी प्रकार के व्यसन मुक्त रहने और नॉनवेज नहीं खाने का संकल्प दिलवाया। तेयुप अध्यक्ष ने आभार ज्ञापन किया।

कार्यक्रम का सफल संयोजन अरविंद बाफना और ज्ञानशाला टीम ने किया। कार्यक्रम में सभी संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

जयपुर

तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में मुनि तत्वरूचिजी, अणुविभा केन्द्र में 'शासन गौरव' 'बहुश्रुत' साध्वी कनकश्रीजी, भिक्षु साधना केन्द्र में साध्वी मंगलप्रभाजी के सान्निध्य में ६ वर्ष तक के बालक-बालिकाओं को उनके अभिभावकों की उपस्थिति में मंत्र दीक्षा प्रदान कर देव, गुरु, धर्म के प्रति समपर्ण और व्यसन मुक्ति की शपथ दिलाई गई। परिषद् की ओर से बच्चों को मंत्र दीक्षा किट प्रदान की गई।

तेयुप जयपुर के अध्यक्ष अमित छल्लानी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में १३६ ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की कुशल संयोजना में संयोजक राजकुमार गोलछा, तेरापंथ भवन में चंद्रकांत बोथरा, अजय लोढ़ा, अणुविभा जयपुर केन्द्र में नवीन जैन, हितेश जैन, भिक्षु साधना केन्द्र में आयुष दूगड़, गर्वित मालू, हर्ष श्यामसुखा एवं तेयुप टीम के सदस्यों के साथ ज्ञानशाला प्रशिक्षकाओं का श्रम भी उल्लेखनीय रहा।

साधना के क्षेत्र में सरलता की बहुत महत्ता है। ऋजु व सत्य साधक व्यक्ति का आभावलय पवित्र होता है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत समिति का गठन एवं शपथ विधि समारोह

कामरेज

साध्वी सम्यक्प्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन कामरेज में अणुव्रत समिति चलथान की नवगठित कार्यसमिति का शपथ विधि समारोह आयोजित हुआ। अणुव्रत समिति चलथान के नवमनोनीत अध्यक्ष बाबूलाल नौलखा एवं उनकी टीम को पायल चोरड़िया ने शपथ ग्रहण करवाई। इसी के साथ कामरेज क्षेत्र में नवीन अणुव्रत समिति का गठन हुआ। पिन्टु मांडोत को सर्वसम्मति से नवगठित अणुव्रत समिति कामरेज के अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया।

इस अवसर पर साध्वी सम्यक्प्रभाजी ने कहा- अणुव्रत आंदोलन नैतिकता का आंदोलन है। आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त यह अवदान मानवता का संदेश देता है। केवल जैन समाज ही नहीं किंतु संपूर्ण जन समाज के उत्थान एवं समग्र राष्ट्र के चारित्रिक विकास हेतु प्रवर्तित यह आंदोलन नैतिकता, नशामुक्ति एवं पर्यावरण सुरक्षा का यह विशेष अभियान है। अणुव्रत आंदोलन के साथ आस्तिक, नास्तिक सभी धर्म, जाति या लिंग के लोग बिना किसी भेदभाव के जुड़ सकते हैं।

अणुविभा पश्चिमांचल संगठन मंत्री पायल चौरड़िया ने अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए पूरजोर आह्वान किया। गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल ने संयोजकीय वक्तव्य में अणुव्रत अभियान को जन-जन तक पहुंचाने का एवं व्यक्ति विकास द्वारा राष्ट्र विकास का लक्ष्य सिद्ध करने का अनुरोध किया।

अणुव्रत समिति चलथान के नवमनोनीत अध्यक्ष बाबूलाल नौलखा एवं अणुव्रत समिति कामरेज के नवमनोनीत अध्यक्ष पिंटु मांडोत ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए पूरे समर्पण भाव से अणुव्रत अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया। तेरापंथी सभा कामरेज के अध्यक्ष महावीर गन्ना, तेयुप अध्यक्ष जयेश मेहता आदि ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

जलगांव

मुनि आलोककुमारजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत भवन में किया गया। मुनि आलोक कुमारजी ने मंत्रों के उच्चारण के द्वारा संस्कार निर्माण की आवश्यकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये। मुनिश्री ने कहा कि नमस्कार महामंत्र के प्रतिदिन जप करने से हम कर्म निर्जरा कर सकते हैं। भौतिकवाद की चकाचौंध में बच्चों के संस्कार निर्माण हेतु ज्ञानशाला उपयोगी उपक्रम है एवं मंत्र दीक्षा के माध्यम से बच्चों में संस्कारों का एक सुरक्षा कवच निर्माण किया जाता है।

मुनि हिमकुमारजी ने नमस्कार महामंत्र पर सुंदर गीत की प्रस्तुति की। अपने वक्तव्य में मुनिश्री ने एक कहानी के माध्यम से प्रतिदिन नमस्कार मंत्र के जप की प्रेरणा दी। मुनि लक्ष्यकुमारजी ने नमस्कार महामंत्र का मासखामण करने की सभी ज्ञानाथएं बच्चों को प्रेरणा प्रदान की। जलगांव ज्ञानशाला के ज्ञानाथएं बच्चों द्वारा विशेष प्रस्तुति की गयी। तेयुप अध्यक्ष सुदर्शन बैद ने अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी श्रेयांश जयेश लोढ़ा के ७ की तपस्या में उपस्थिति कार्यक्रम की विशेषता रही। कार्यक्रम में जलगांव, भुसावल व नशीराबाद से कुल ६० ज्ञानार्थी बच्चे उपस्थित थे। आयोजन की सफलता में ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, ज्ञानशाला प्रभारी, तेरापंथ युवक परिषद के पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

योगक्षेम — अभातेयुप योगक्षेम योजना

❋ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
❋ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
❋ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
❋ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
❋ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
❋ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
❋ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
❋ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
❋ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
❋ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
❋ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
❋ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
❋ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

अपने संस्कार : अपनी निधि
जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

गुवाहाटी

गंगाशहर निवासी संजय-ज्योति छलानी की सुपुत्री का नामकरण संस्कारक बाबूलाल सुराणा, अशोक मालु, अशोक बोरड़ एवं बजरंग डोसी ने विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से की छलानी परिवार ने त्याग प्रत्याख्यान किया। इस अवसर पर तेयुप की ओर से उपस्थित उपाध्यक्ष द्वितीय विकास नाहाटा, मंत्री संदीप कुमार भादानी, कार्यकारिणी सदस्य मूलचंद लुणावत, दीपक खटेड़, राहुल नाहटा एवं सदस्य सौरभ चौरड़िया ने बधाई दी और जैन संस्कार विधि से नामकरण करवाने पर छलानी परिवार का आभार ज्ञापन किया। छलानी परिवार ने भी संस्कारकों एवं तेयुप सदस्यों का आभार ज्ञापन किया।

सूरत

चाड़वास निवासी सूरत प्रवासी मोहित-निकिता लुणिया की पुत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक विजयकांत खटेड़, सतीश संकलेचा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संम्पन करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग प्रत्याख्यान किया। मेजबान परिवार द्वारा उपस्थित पारिवारिकजनों व संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के कार्यालय का शुभारंभ

अहमदाबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद की संस्कारक टीम द्वारा संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अंतर्गत तेरापंथ भवन, शाहीबाग, अहमदाबाद में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के कार्यालय का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से करवाया गया। जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षक, उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा, संस्कारक नानालाल कोठारी, अरुण बैद, बाबूलाल चोपड़ा एवं विक्रम दूगड़ ने विविध संकल्पों से संकल्पित करवाते हुए विधिवत समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ उद्घाटन विधि को संपादित किया। कार्यक्रम में संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, महामंत्री विनोद बैद एवं ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा (सी .ए .) की गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्री जैन श्वेताम्बर अहमदाबाद तेरापंथी सभा अध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया, मंत्री अरुण बैद, तेरापंथ सेवा समाज ट्रस्टी सज्जनलाल सिंघवी, ट्रस्ट अध्यक्ष नानालाल कोठारी, मंत्री दिनेश बालड़, विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारीगण, अहमदाबाद की विभिन्न ज्ञानशालाओं की मुख्य प्रशिशिक्षिकाओं एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की विशेष उपस्थिति रही। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा गीतिका की सुमधुर प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशालाओं की प्रशिक्षिकाओं के द्वारा मंगलाचरण का सामूहिक उच्चारण किया गया। कार्यक्रम में तेयुप अहमदाबाद प्रबंध मंडल एवं कार्यकर्ताओं की भी उपस्थिति रही।

हेल्थ क्लब का शुभारंभ

राजाजीनगर

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा प्रातःकालीन वेला में हेल्थ क्लब का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से स्थानीय तेरापंथ सभा भवन राजाजीनगर में संपन्न हुआ। नमस्कार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण करते हुए संस्कारक सतीश पोरवाड़, राजेश देरासरिया एवं रनीत कोठारी ने मंगल मंत्रोचार के उच्चारण से विधि को संपन्न करवाया।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, राजाजीनगर सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी, तेयुप राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी, बैंगलोर अभातेयुप साथीगण, स्थानीय शाखा परिषदों के अध्यक्ष, तेयुप राजाजीनगर सदस्य एवं बेंगलुरु के श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

मनोनुशासनम्

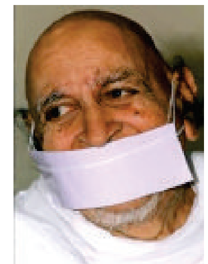

ः आचार्य तुलसी ः

(क्रमशः)

भोगी तथा रोगी व्यक्ति के काम-वासना की उद्दीप्ति तथा वायुविकार आदि शारीरिक रोग होने पर वीर्य का व्यय जननेंद्रिय से होता है।

योगी लोग वीर्य का प्रवाह ऊपर की ओर मोड़ देते हैं। अतः उनके वीर्य का व्यय मस्तिष्क में होता है। वीर्य का प्रवाह नीचे की ओर अधिक होने से काम-वासना बढ़ती है और उसका प्रवाह ऊपर की ओर होने से काम-वासना धटती है।

काम-वासना के कारण जननेन्द्रिय द्वारा जो वीर्य व्यय होता है, वह अब्रह्मचर्य का ही एक प्रकार है। वह सीमित होता है तो उसका शरीर पर अधिक हानिकारक प्रभाव नहीं होता। मन में मोह और संस्कारों में अशुद्धि उत्पन्न होती है। इसे आध्यात्मिक दृष्टि से हानि ही कहा जाएगा।

जो आदमी अब्रह्मचर्य में अति आसक्त होता है, उसकी वृषण ग्रंथियों में आने वाले रस-रक्त का उपयोग बहिःस्राव उत्पन्न करने वाले अवयव कर लेते हैं। इसका फल यह होता है कि अंतःस्राव उत्पन्न करने वाली अवयव उचित सामग्री के अभाव में अपना काम करने में अक्षम रह जाते हैं। फलतः सर्व धातुओं और सर्वांग पर होने वाल अंतःस्राव के महत्त्वपूर्ण प्रभावों से वंचित रह जाता है और अनेक प्रकार के विकास उसके शरीर में उत्पन्न होते हैं।

आयुर्वेद के ग्रंथों में इस विषय को एक उदाहरण के द्वारा समझाया गया है। सात क्यारियों में सातवीं क्यारी में बड़ा गर्त हो या उसमें से जल निकलने के लिए छेद हो तो सीधी-सी बात है कि पहले संपूर्ण जल उस गड्ढे में भरने लगेगा या उस क्यारी को पूर्ण करने में व्यय होगा। यही स्थिति अति-मैथुन आदि के कारण होने वाले शुक्रक्षय में होती है। निश्चित ही संपूर्ण रस प्रथम शुक्र-धातु की पुष्टि में लगता है किंतु अति मैथुनवश शुक्र पुष्ट हो ही नहीं पाता। परिणामतया अन्य वस्तुओं की पुष्टि रस से हो नहीं पाती और शरीर में विभिन्न विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

ब्रह्मचर्य से इंद्रिय-विजय और इंद्रिय-विजय से ब्रह्मचर्य सिद्ध होता है। वस्तुतः इंद्रिय-विजय और ब्रह्मचर्य दो नहीं हैं। ब्रह्मचर्य की इंद्रिय-विजय से एकात्मकता है, इसलिए उससे शरीर की स्थिरता, मन की स्थिरता और अनुद्विग्नता, अदम्य उत्साह, प्रबल सहिष्णुता, धैर्य आदि अनेक गुण विकसित होते हैं।

ब्रह्मचर्य से हमारे स्थूल अवयव उतने प्रभावित नहीं होते, जितने सूक्ष्म अवयव होते हैं।

कुछ लोगों का मत है कि पूर्ण ब्रह्मचर्य का शरीर और मन पर अनुकूल प्रभाव नहीं होता। इस मत में सच्चाई का अंश भी है पर उसी स्थिति में जब ब्रह्मचर्य का पालन करके विवशता की परिस्थिति में हो। चिंतन के प्रवाह को काम-वासना की लहरों से मोड़कर अन्य उदात्त भावनाओं की ओर ले जाया जाए तो ब्रह्मचर्य स्ववशता की परिस्थिति में विकास पाता है। उसका शरीर और मन की सूक्ष्मतम स्थितियों पर बड़ा लाभदायी प्रभाव पड़ता है।

बहुत सारे लोग ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहते हैं, फिर भी नहीं कर पाते। ऐसा क्यों होता है? अब्रह्मचर्य की भावना सहज ही क्यों उभर आती है? इस प्रश्न का उत्तर कर्मशास्त्रीय भाषा में यह है कि यह सब मोह के कारण होता है। पर शरीरशास्त्र की भाषा में कर्म का स्थान नहीं है। उसके अनुसार कामवाहिनी नाड़ियों में रक्त का संचरण होने से अब्रह्मचर्य की भावना उभरती है। उसका संचरण नहीं होता तो वह भावना नहीं उभरती। संचरण कम होने से वह भावना कम उभरती है और संचरण अधिक होने से वह भावना अधिक उभरती है। इस संदर्भ में हम उस तथ्य की ओर संकेत कर सकते हैं कि ब्रह्मचारी के लिए गरिष्ठ या दर्पक आहार का निषेध क्यों किया गया?

अब्रह्मचर्य एक आवेग है। हर आवेग पर मनुष्य अपनी नियंत्रण-शक्ति से विजय पाता है। मन की नियंत्रण-शक्ति का विकास ब्रह्मचर्य का प्रमुख उपाय है। पर यह प्रथम उपाय नहीं है। प्रथम है—ब्रह्मचर्य के प्रति गाढ़ श्रद्धा होना। दूसरा है—वीर्य या रक्त के प्रवाह को मोड़ने की साधना। इसमें ब्रह्मचर्य जितना सहज हो सकता है, उतना नियंत्रण शक्ति से नहीं।

काम-वासना मस्तिष्क के पिछले भाग में प्रारंभ होती है, इसलिए जैसे ही वह उभरे, वैसे ही उस स्थान में मन को एकाग्र कर कोई शुभ-संकल्प किया जाए, जिससे वह उभार शांत हो जाए।

पेट में मल, मूत्र और वायु का दबाव बढ़ने से काम-वाहिनी नाड़ियाँ उत्तेजित होती हैं। खान-पान और मल-शुद्धि में सजग रहना ब्रह्मचर्य की बहुत बड़ी शर्त है। वायु विकार न बढ़े इस ओर ध्यान देना भी बहुत आवश्यक है।

काम-जनक अवयवों के स्पर्श से भी वासना बढ़ सकती है। इन सारी बातों का ब्रह्मचर्य के परिपार्श्व में बहुत महत्त्व है, पर इन सबसे जिसका अधिक महत्त्व है, वह है वीर्य या रक्त-प्रवाह को मोड़ने की प्रक्रिया। उसकी कुछ विधियाँ इस प्रकार हैं—

ऊर्ध्वाकर्षण

(क) सिद्धासन में बैठिए। श्वास का रेचन कीजिए—बाहर निकालिए। बाह्य कुम्भक कीजिए—श्वास को बाहर रोके हुए रहिए। इस स्थिति में संकल्प कीजिए कि वीर्य रक्त के साथ मिलकर समूचे शरीर में घूम रहा है। उसका प्रवाह ऊपर की ओर हो रहा है।

संकल्प इतनी तन्मयता से कीजिए कि वैसा प्रत्यक्ष अनुभव होने लगे। जितनी देर सुविधा से कर सकें, यह संकल्प कीजिए। फिर पूरक कीजिए—श्वास को अंदर भरिए। पूरक की स्थिति में मूलबंध कीजिए—गुदा को ऊपर की ओर खींचिए तथा जालंधरबंध कीजिए—ठुड्डी को तानकर कंठकूप में लगाइए। फिर पेट को सिकोड़िए और फुलाइए। आराम से जितनी बार ऐसा कर सकें, कीजिए, फिर रेचन कीजिए। यह एक क्रिया हुई। इसे अभ्यास बढ़ाते-बढ़ाते सात या नौ बार दोहराइए।

(ख) पीठ के बल चित लेट जाइए। सिर, गर्दन और छाती को सीध में रखिए। शरीर को बिलकुल शिथिल कीजिए। मुँह को बंद कर पूरक कीजिए। पूरक करते समय यह संकल्प कीजिए कि काम-शक्ति का प्रवाह जननेन्द्रिय से मुड़कर मस्तिष्क की ओर जा रहा है। मानसिक चक्षु से यह देखिए कि वीर्य रक्त के साथ ऊपर जा रहा है। कामवाहिनी (जननेन्द्रिय के आसपास की) नाड़ियाँ हल्की हो रही हैं और मस्तिष्क की नाड़ियाँ भारी हो रही हैं।

पूरक के बाद अंतःकुंभक कीजिए—श्वास को सुखपूर्वक अंदर रोके रहिए। फिर धीमे-धीमे रेचन कीजिए।

पूरक और रेचन का समय समान और कुंभक का समय उससे आधा होना चाहिए। यह क्रिया बढ़ाते-बढ़ाते पंद्रह-बीस बार तक करनी चाहिए। वीर्य के ऊर्ध्वारोहण का संकल्प जितना दृढ़ और स्पष्ट होगा, उतनी ही काम-वासना कम होती जाएगी।

कुक्कुटामन

इससे काम-वाहिनी स्नायुओं पर दबाव पड़ता है। उससे मन शक्तिशाली और प्रशांत होता है। काम-वासना क्षीण होती है।

मन की स्थिरता होने से वायु की स्थिरता होती है। वायु की स्थिरता से वीर्य की स्थिरता होती है। वीर्य की सिरिता से शरीर की स्थिरता प्राप्त होती है। कहा भी है—

मनःस्थैर्यात् स्थिरो वायुस्ततो बिंदुःस्थिरो भवेत्।
बिन्दुस्थैर्यात् सदा सत्त्वं, पिण्डस्थैर्यं च जायते।।

ऊर्ध्वाकर्षण की प्रक्रिया केवल पुरुषों के लिए है। स्त्रियों के लिए संकल्प शुद्धि का अभ्यास सहायक हो सकता है।

(२६) शयनकाले सत्संकल्पकरणम्।।
(२७) ते च—ज्योतिर्मयोऽहं स्वस्थोऽहं निर्विकारोऽहं वीर्यवानहं—इत्यादयः।।
(२८) निद्रामोक्षे जपो ध्यानञ्ज।।
(२९) परानिष्टचिन्तनेन मनोविघातः।।
(३०) आत्मौपम्यचिन्तया मनोविकासः।।

(२६) सोते समय पवित्र संकलप करने चाहिए।
(२७) मैं ज्योतिर्मय हूँ, आनंदमय हूँ, स्वस्थ हूँ, निर्विकार हूँ, वीर्यवान् हूँ—आदि-आदि सत्संकल्प हैं। संकल्प करते समय मन स्थिर और पवित्र होना चाहिए।
(२८) नींद टूटते ही जप और ध्यान करना चाहिए।
(२९) दूसरों की अनिष्ट चिंता करने से मन की शक्ति का हनन होता है।
(३०) आत्मौपम्य (प्राणी मात्र को अपने समान मानकर) चिंतन करने से मन का विकास होता है।

संकल्प

मानसिक विकास के अनेक साधन हैं। उनमें दृढ़ संकल्प भी एक साधन है। दृढ़ संकल्प का व्यक्ति के जीवन पर सीधा असर होता है। उससे व्यक्ति के संस्कारों का निर्माण होता है। मन में अच्छे संस्कार जागते हैं, तब व्यवहार पर भी अच्छाई का प्रतिबिंब पड़ता है। किसी के प्रति बुरी भावना उठती है, तो उसका परिणाम भी लंबे समय तक भुगतना पड़ता है।

प्रत्येक व्यक्ति में मानवीय दुर्बलताएँ होती हैं। किसी में क्रोध, किसी में ईर्ष्या तो किसी में आग्रह आदि-आदि वृत्तियों की शुद्धि के लिए संकल्प सीधा मार्ग है। संकल्प की साधना करने वाला इन सूत्रों पर ध्यान दे—

(क) संकल्प दृढ़ निष्ठा व विश्वास के साथ करना चाहिए—मैं यह काम कर सकता हूँ, यह काम होकर रहेगा।
(ख) संकल्प उच्चारणपूर्वक होना चाहिए। कम से कम बीस-तीस बार संकल्प को जोर से बोलकर दोहराना चाहिए।
(ग) संकल्प में तन्मय होने से वह शरीर-व्यापी हो जाता है।

(क्रमशः)

विद्या विनय से शोभित होती है। विद्यार्थियों में विनम्रता का विकास होना चाहिए। गुरु के ज्ञान प्राप्त करने हेतु विनय का विकास अपेक्षित होता है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

संबोधि

ः आचार्य महाप्रज्ञ ः

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३१) आत्मगुप्तः सदा दान्तः, छिन्नस्रोता अनास्रवः।
स धर्मं शुद्धमाख्याति, प्रतिपूर्णमनीदृशम्।।

(पिछला शेष) (१) **आत्मगुप्त**–(आत्म-रक्षित)–आत्मा की असुरक्षा के हेतु हैं–इंद्रियों की ओर मन की चंचलता। इंद्रियाँ विषयों का ग्रहण करती हैं और मन को अपना संवाद पहुँचाती हैं। मन अनुरक्ति और विरक्ति, चाहिए और नहीं चाहिए कि दौड़-धूप में व्यग्र हो उठता है। पूर्वबद्ध संस्कारों के कारण आत्मा की ध्वनि दब जाती है और मन सक्रिय हो उठता है। यह असमाधि है, दुःख है। जिस साधक ने इन्हें ठीक समझकर, जानकर और देखकर समाधिस्थ बना लिया है, शांत बना लिया है, जिसकी इंद्रियाँ जब स्वयं के अधीन हो गई हैं, जो अपना मालिक है, वह आत्म-गुप्त होता है।

(२) **दांत-शांत**–जो सदा उपशांत रहता है। अशांति का हेतु है–कषाय। कषाय संसार है और अकषाय मुक्ति। कषाय हो और अशांति न हो यह संभव नहीं है। साधना कषाय की शांति के लिए है। **'कषायमुक्ति : किल मुक्तिरेव'** कषाय की शांति को मुक्ति कहा है। वक्ता के लिए शांत होना अनिवार्य है। राग-द्वेषयुक्त वक्ता के द्वारा शुद्ध धर्म का निरूपण संभव नहीं है।

(३) **छिन्नस्रोता**–जिसने कर्म आने के मार्गों को नष्ट कर दिया है। इसका एक अर्थ और भी है। संसारानुगामी लोग-व्यवहार से जो ऊपर उठ जाता है वह छिन्नस्रोता हो जाता है। एक यथार्थद्रष्टा को लोक-व्यवहार से मुक्त होना आवश्यक है। धर्म के सम्यक् प्रतिपादन में लोक व्यवहार भी एक बाधा है। साधक लोकहित के लिए बोलता है, न कि लोकरंजन के लिए। 'जनरंजनाय' कहकर आचार्य ने अपना पश्चात्ताप प्रकट किया है। धर्म के प्रतिपादन का उद्देश्य होता है–लोगों को सही मार्गदर्शन देना। यह तभी संभव है जबकि साधक सत्य के अतिरिक्त किसी को महत्त्व नहीं देता। सत्य सर्वोपरि है। सत्य के मार्ग में आने वाली सभी अड़चनों से जो मुक्त हो चुका है वह है–छिन्नस्रोता।

(४) **अनास्रव**–शाब्दिक परिभाषा की दृष्टि से अनास्रव का अर्थ होता है–पाँच आस्रव-द्वारों से रहित। इसका दूसरा अर्थ मध्यस्थ भी होता है। जो शुभ-अशुभ विचारों में सदा तटस्थ, समत्ववान्, मध्यस्थ रहता है, वह अनास्रव होता है। यहाँ मध्यस्थ अर्थ अधिक संगत लगता है। धर्म का उपदेष्टा यदि स्थिर न हो तो सत्य के निरूपण में बड़ी कठिनाई पैदा होगी। फिर वह कभी बायें झाँकेगा और कभी दाएँ। उसे दूसरों पर निर्भर होना होगा।

तटस्थ व्यक्ति सदा स्थिर रहता है, न वह इधर झाँकता है और न उधर। वह संतुलित रहता है। सत्य का आविर्भाव उसी स्थिति में संभव है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शब्दों में–लोगों को सिखाना कठिन काम है। भगवान् के दर्शन के बाद यदि किसी को उनका आदेश प्राप्त हो तो वह लोक-शिक्षा (उपदेश) दे सकता है।

(क्रमशः)

अवबोध

ः मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ः

कर्म बोध

अवस्था व समवाय

प्रश्न ५ : कर्म बंध के चार प्रकारों का क्रम क्या है?

उत्तर : चार ही बंध युगपत् प्रारंभ होते हैं। जीव कोई भी शुभाशुभ प्रवृत्ति करता है, तो उसके ये चारों बंध एक साथ शुरू होते हैं। इसको एक दृष्टांत के द्वारा सम्यक् रूप से समझा जा सकता है। डॉक्टर रोगी के इंजेक्शन लगाता है, तो चार कार्य एक साथ फलित होने प्रारंभ हो जाते हैं। उन फलितों के साथ इन चार बंध की तुलना की जा सकती है–

(१) प्रकृति बंध – इंजेक्शन का स्वभाव गर्म है या ठंडा, कठोर है या सरल
(२) स्थिति बंध – इंजेक्शन का अमुक समय तक असर
(३) अनुभाग बंध – इंजेक्शन के कार्य करने की शक्ति
(४) प्रदेश बंध – इंजेक्शन का पूरे शरीर में खून में मिल जाना।

प्रश्न ६ : उद्वर्तन किसे कहते हैं?

उत्तर : स्थिति बंध व अनुभाग बंध के बढ़ने को उद्वर्तन कहते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

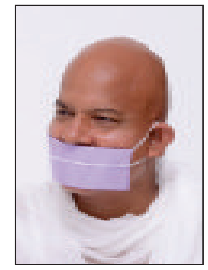

(भाग - एक)

ः आचार्य महाश्रमण ः

जैन जीवनशैली

सम्यक् संस्कार

जैन जीवनशैली का सातवाँ सूत्र है–सम्यक् संस्कार। आदमी संस्कारों के आधार पर जीवन जीता है। जैसा संस्कार वैसा व्यवहार। प्रारंभ से ही अच्छे संस्कार मिलते हैं तो जीवन अच्छा बनता है। एक तोते को अच्छा संस्कार मिला था इसलिए उसने राजा का स्वागत किया। दूसरे तोते को बुरे संस्कार मिले थे इसलिए राजा को देखते ही वह बोल पड़ा–'आओ, मारो, काटो, लूटो।' राजा ने पहले तोते से पूछा–'दोनों के स्वभाव में इतनी भिन्नता का कारण क्या है? उसने बताया–'हम दोनों सगे भाई हैं। मैं एक ऋषि के आश्रम में पला-बढ़ा, वहाँ के संस्कार सीखे। मेरा भाई चोरों के पास रहा, उसने उन्हीं के संस्कार और भाषा सीखी।'

जीवन की नींव ही संस्कारों पर आधारित होती है। जैन जीवनशैली में कुछ संस्कार निर्धारित किए गए हैं, जैसे–अभिवादन में जय जिनेंद्र का प्रयोग। इस अभिवादन में 'वीतराग की जय' की भावना परिलक्षित होती है। घर की साज-सज्जा और वातावरण हमें निरंतर इस बात की प्रेरणा देने वाला होना चाहिए कि हमें वीतरागता की दिशा में प्रस्थित होना है। वीतरागता हमारा लक्ष्य है। कुल मिलकर हमारे संस्कार वीतरागोन्मुखी होने चाहिए। संस्कारों की फिसलन बहुत है, राग की ओर ले जाने वाले घटक बहुत हैं, किंतु वीतरागता की ओर जाने की प्रवृत्ति बने तो हमारी जीवनशैली अधिक प्रभावी बनेगी।

आहारशुद्धि और व्यसनमुक्ति

जैन जीवनशैली का आठवाँ सूत्र है– आहारशुद्धि और व्यसनमुक्ति। आहार अध्यात्म का पुराना विषय भी है और नया विषय भी। पुराना इसलिए कि धर्मशास्त्रों में आहारशुद्धि पर बहुत बल दिया गया है। नया इस अर्थ में कि आज विज्ञान आहार के संबंध में बहुत सारी नई बातें हमारे सामने प्रस्तुत कर रहा है।

हमारे आहार से आचार, विचार और व्यवहार का बहुत निकट का संबंध है, इसलिए आहार पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। ऐसा आहार न हो, जो उत्तेजना बढ़ाए, संस्कारों में विकृति लाए। मांस वर्जन इसीलिए है कि पशु के संस्कार मांस के साथ आदमी में आते हैं। जिसका मांस खाया जाता है, उसके संस्कार उनमें संचित रहते हैं। फिर पशु का मांस खाने वाला पाशविक संस्कारों से कैसे बच सकता है? उसमें पशुता जागृत हो जाने की बहुत संभावना है। हमारे मस्तिष्क में पशु के मस्तिष्क की भी एक परत है। मांस खाते रहने से वह सक्रिय हो जाती है और मांस खाने को प्रेरित करती रहती है। स्वास्थ्य के लिए भी शाकाहार ही सबसे ज्यादा अनुकूल माना गया है। आहार-शुद्धि पर ध्यान देने वाला सबसे पहले इस बात पर ध्यान केंद्रित करेगा कि आहार इतना शुद्ध हो कि उसमें विकृति पैदा करने वाले तत्त्वों का समावेश न हो।

व्यसनमुक्ति और आहार का भी गहरा संबंध है, क्योंकि आहार भी आदमी को व्यसन की ओर ले जाने वाला होता है। आहार शुद्ध होता है तो व्यसनों से मुक्त होना सरल बन जाता है। जुआ खेलना, शराब पीना, चोरी करना–ये सारे व्यसन हैं और इन्हें प्रेरणा मिलती है आहार की अशुद्धि से। पुरानी कथा है–एक मुनि को एक दिन विकृत आहार मिल गया। परिणामस्वरूप उसने एक सेठ के घर से हार चुरा लिया। जंगल में जाने के बाद उसे वमन हुई, सारा भोजन निकल गया। वमन होते ही चेतना लौटी, अपने कृत्य का भान हुआ। उसनेसेठ को हार वापस दे दिया। आहार विकृति के कितने बुरे परिणाम होते हैं, इसका पता हमें तब चलेगा, जब अपने शरीर और मन पर सूक्ष्मता से ध्यान देंगे।

(क्रमशः)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अणुव्रतों का हीरक वर्ष अणुव्रत यात्रा का आगाज,
पांव-पांव चल गुर्जर प्रान्त पधारे भैक्षवगण-अधिराज।
अक्षयतीज पर्व, सूरत में एक नया इतिहास बना,
साधिक ग्यारह सौ भाई-बहनों का पूर्ण हुआ सपना।।

आर्यदेव का दीक्षा-कल्याणक उत्सव छाया उल्लास,
प्रभुवर के चरणों में अर्पित मंगल भावों के उच्छवास।
गुरुवर का आह्वान एक नव-नव वैरागी हों तैयार,
शासन की श्रीवृद्धि हेतु यह होगा सर्वोत्तम उपहार।।

नमोत्थु णं
समणस्स भगवओ महावीरस्स

येषां यात्रा विलसतितरां विश्रुता लक्ष्यबद्धा,
येषां वाणी शिवसुखकरी शक्तिशान्तिप्रदात्री।
येषामन्तः प्रवहतितमां पुण्यकारुण्यधारा,
तेषां कर्तुं प्रवरप्रणतिं भक्तिमन्तः समुत्काः।।

शेष काल में जैनेतर-जैनाचार्यों से हुआ मिलन,
प्रभुदर्शन से वार्ता से छाई सबमें अतिशय पुलकन।
ब्रह्मकुमारी मुख्यालय फिर धर्मपुरी में पादार्पण,
संघप्रभावी हुए उपक्रम मुख-मुख पर जय महाश्रमण।।

मोहमयी मुंबई महानगरी में भैक्षव गण सम्राट,
श्रद्धानत जन-जन का मानस विभुवर का व्यक्तित्व विराट।
सागर के तट पर देखी सबने आस्था की नई हिलोर,
धवल रश्मियां देख धरा पर प्रमुदित थे मन-नयन-चकोर।।

हे प्रभो! यह तेरापंथ

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अध्यात्म जगत् के उज्ज्वल नक्षत्र, महातपस्वी, अहिंसायात्रा-प्रणेता, विश्वविभूति, अणुव्रत अनुशास्ता, युगप्रधान, परम श्रद्धेय **आचार्यश्री महाश्रमण** के आज्ञावर्ती चारित्रात्माओं के

:: चातुर्मासिक प्रवास : विक्रम संवत २०८० ::

१. महाराष्ट्र प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ८, संत ५६, सतियां १४३ विद्यावारिधि, धृतिधर, विमलमूर्ति **आचार्यश्री महाश्रमणजी** आदि संत ५०, **साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी** आदि सतियां १२२, घोडबंदर, बृहत्तर मुम्बई (महाराष्ट्र)।

२. मुनिश्री अर्हत् कुमारजी	पदराड़ा	संत ३	छत्रपतिसंभाजीनगर (औरंगाबाद)
३. मुनिश्री आलोककुमारजी	लोणार	संत ३	जलगांव
४. साध्वीश्री विद्यावतीजीद्वितीय	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	कांदिवली, मुम्बई
५. साध्वीश्री पावनप्रभाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	साक्री
६. *साध्वीश्री पुण्ययशाजी	बीदासर	सतियां ४	मालेगांव
७. साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी	रामसिंहजी का गुड़ा	सतियां ४	धूलिया
८. साध्वीश्री उज्ज्वलप्रभाजी	लोणार	सतियां ४	पूना

२. राजस्थान प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ५८, संत ५४, सतियां २५२

(क) थली विभाग : चातुर्मासिक प्रवास २३, संत १३, सतियां १३४

१. मुनिश्री विजयकुमारजी	सुजानगढ़	संत ५	छापर (सेवाकेन्द्र)
२. *मुनिश्री श्रेयांसकुमारजी	गंगाशहर	संत २	गंगाशहर
३. *मुनिश्री चैतन्यकुमारजी	गंगाशहर	संत २	भीनासर
४. मुनिश्री जम्बूकुमारजी	सरदारशहर	संत २	चाड़वास
५. मुनिश्री अमृतकुमारजी	झाबुआ	संत २	पीलीबंगा
६. साध्वीश्री पानकुमारीजी (द्वि.)	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ६	लूणकरणसर
७. साध्वीश्री मानकुमारीजी	सरदारशहर	सतियां ७	राजलदेसर
८. साध्वीश्री चांदकुमारीजी	लाडनूं	सतियां ५	तुलसी साधना केन्द्र, बीकानेर
९. साध्वीश्री राजीमतीजी	रतनगढ़	सतियां ८	नोखामंडी
१०. साध्वीश्री विद्यावतीजी 'प्रथम'	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	शार्दुलपुर
११. साध्वीश्री सुप्रभाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	सुजानगढ़
१२. साध्वीश्री विनयश्रीजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ३	पड़िहारा
१३. साध्वीश्री संयमश्रीजी	रतनगढ़	सतियां ४	देशनोक
१४. साध्वीश्री मंजुप्रभाजी	छापर	सतियां ४	उदासर
१५. साध्वीश्री शशिरेखाजी }	बाव	सतियां २५	गंगाशहर (सेवाकेन्द्र)
साध्वीश्री ललितकलाजी }	गंगाशहर		
१६. साध्वीश्री उज्ज्वलरेखाजी	सरदारशहर	सतियां ६	कालू
१७. *साध्वीश्री अर्हत्प्रभाजी	सरदारशहर	सतियां ३	चूरू
१८. *साध्वीश्री सूरजप्रभाजी	टमकोर	सतियां ४	राजगढ़
१९. साध्वीश्री रचनाश्रीजी }	टमकोर	सतियां १७	बीदासर (समाधिकेन्द्र)
साध्वीश्री यशोमतीजी }	राजगढ़		
साध्वीश्री साधनाश्रीजी }	सरदारशहर		
साध्वीश्री अमितप्रभाजी }	बीदासर		
२०. साध्वीश्री सुदर्शनाश्रीजी	सरदारशहर	सतियां ७	सरदारशहर
२१. साध्वीश्री सम्पूर्णयशाजी	सरदारशहर	सतियां १७	श्रीडूंगरगढ़ (सेवाकेन्द्र)
२२. *साध्वीश्री समन्वयप्रभाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतिया ४	मोमासर
२३. साध्वीश्री चरितार्थप्रभाजी	चेन्नई	सतियां ५	श्रीगंगानगर

(ख) मारवाड़ विभाग : चातुर्मासिक प्रवास १९, संत २३, सतियां ६८

१. मुनिश्री मणिलालजी }	सरदारशहर	संत ५	सिरियारी
मुनिश्री धर्मेशकुमारजी }	कांजीवरम्		
२. मुनिश्री मुनिव्रतजी	गंगाशहर	संत ३	सोजत रोड़
३. मुनिश्री रणजीतकुमारजी }	राजलदेसर	संत ९	जै.वि.भा., लाडनूं (सेवाकेन्द्र)
मुनिश्री विजयराजजी }	राजगढ़		
४. मुनिश्री सुमतिकुमारजी	गंगाशहर	संत ३	नया तेरापंथ भवन, बालोतरा
५. मुनिश्री जयकुमारजी	टापरा	संत ३	टापरा
६. साध्वीश्री सत्यप्रभाजी	देवगढ़	सतियां ४	तेरापंथ भवन, बालोतरा
७. साध्वीश्री कमलप्रभाजी	बोरज	सतियां ५	जसोल
८. साध्वीश्री सत्यवतीजी	हांसी	सतियां ६	पचपदरा
९. साध्वीश्री कल्पलताजी	लाडनूं	सतियां ८	जै.वि.भा., लाडनूं
१०. साध्वीश्री मधुरेखाजी	गंगाशहर	सतियां ५	किशनगढ़
११. साध्वीश्री शान्ताकुमारीजी	गंगाशहर	सतियां ४	ब्यावर
१२. साध्वीश्री प्रमोदश्रीजी	पचपदरा	सतियां ५	पाली
१३. साध्वीश्री संघप्रभाजी	राजलदेसर	सतियां ३	छोटीखाटू
१४. साध्वीश्री गुप्तिप्रभाजी	तारानगर	सतियां ४	असाढ़ा
१५. साध्वीश्री कुन्दनप्रभाजी	उदासर	सतियां ४	सरदारपुरा, जोधपुर
१६. साध्वीश्री जिनबालाजी	गंगाशहर	सतियां ४	बाड़मेर
१७. साध्वीश्री रतिप्रभाजी	बालोतरा	सतियां ४	जाटावास, जोधपुर
१८. *साध्वीश्री लक्ष्यप्रभाजी	मारवाड़ जंक्शन	सतियां ८	लाडनूं (सेवाकेन्द्र)
१९. साध्वीश्री प्रांजलप्रभाजी	समदड़ी	सतियां ४	बोरावड़

(ग) मेवाड़ विभाग : चातुर्मासिक प्रवास १२, संत १६, सतियां ३२

१. मुनिश्री हर्षलालजी }	लाछुड़ा	संत ८	भीलवाड़ा-पुर
मुनिश्री पारसकुमारजी }	लाछुड़ा		
२. मुनिश्री सुरेशकुमारजी	हरनावां	संत २	महाप्रज्ञ विहार, भुवाणा, उदयपुर
३. मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी	गोगुंदा	संत २	कांकरोली
४. मुनिश्री संजयकुमारजी }	दिवेर	संत ४	पड़ासली
मुनिश्री प्रसन्नकुमारजी }	दिवेर		
५. साध्वीश्री जसवतीजी	सरदारशहर	सतियां ५	आसीन्द
६. साध्वीश्री विशदप्रज्ञाजी	बीदासर	सतियां ४	नाथद्वारा
७. साध्वीश्री कीर्तिलताजी	बैंगलुरु	सतियां ४	आमेट
८. *साध्वीश्री परमयशाजी	बीदासर	सतियां ४	राजनगर
९. साध्वीश्री प्रबलयशाजी	छापर	सतियां ३	केलवा
१०. साध्वीश्री कार्तिकयशाजी	पचपदरा	सतियां ५	देवगढ़
११. *साध्वीश्री परमप्रभाजी	बीदासर	सतियां ४	तेरापंथ भवन, उदयपुर
१२. साध्वीश्री प्रसन्नयशाजी	कालू	सतियां ३	रेलमगरा

(घ) हाडौती-ढूंढ़ाड विभाग : चातुर्मासिक प्रवास ५, संत २, सतियां १८

१. मुनिश्री तत्त्वरुचिजी	आमेट	संत २	विद्याधरनगर, जयपुर
२. साध्वीश्री धनश्रीजी	सरदारशहर	सतियां ४	कोटा
३. साध्वीश्री कनकश्रीजी	लाडनूं	सतियां ६	अणुविभा, जयपुर
४. साध्वीश्री पुण्यप्रभाजी	बाड़मेर	सतियां ४	आदर्शनगर, सवाई माधोपुर
५. साध्वीश्री मंगलप्रभाजी	लाडनूं	सतियां ४	श्यामनगर, जयपुर

३. दिल्ली प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ६, संत ३, सतियां २६

१. मुनिश्री कमलकुमारजी	गंगाशहर	संत ३	कृष्णानगर-गांधीनगर, दिल्ली
२. साध्वीश्री संघमित्राजी }	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ७	रोहिणी, दिल्ली
साध्वीश्री ललितप्रभाजी }	सरदारशहर		
३. साध्वीश्री रतनश्रीजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	पीतमपुरा, शालीमारबाग, दिल्ली
४. साध्वीश्री रविप्रभाजी	लाडनूं	सतियां ५	मॉडलटाउन, शास्त्रीनगर, दिल्ली
५. साध्वीश्री अणिमाश्रीजी	मोमासर	सतियां ५	शाहदरा, दिल्ली
६. साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी	हिसार	सतियां ४	ग्रीन पार्क, अध्यात्म साधना केन्द्र, दिल्ली

४. हरियाणा प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १२, संत २, सतियां ५१

१. मुनिश्री पृथ्वीराजजी	जसोल	संत २	हिसार
२. साध्वीश्री भाग्यवतीजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	हांसी
३. साध्वीश्री सरोजकुमारीजी	मुम्बई	सतियां ५	कालांवाली
४. साध्वीश्री यशोधराजी	लाडनूं	सतियां ७	मॉडल टाउन, हिसार
५. साध्वीश्री सुमनश्रीजी	बीदासर	सतियां ५	आदमपुर मण्डी
६. साध्वीश्री तिलकश्रीजी	सुजानगढ़	सतियां ४	टोहाणा
७. साध्वीश्री प्रशमरतिजी	तारानगर	सतियां ४	भिवानी
८. *साध्वीश्री प्रेमलताजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	सेक्टर-१४, हिसार
९. साध्वीश्री कुंथुश्रीजी	उमरा	सतियां ४	सिवानी
१०. साध्वीश्री संयमप्रभाजी	हांसी	सतियां ४	नरवाणा
११. साध्वीश्री लब्धिप्रभाजी	टिटिलागढ़	सतियां ३	उचाणामंडी
१२. साध्वीश्री शुभप्रभाजी }	राजगढ़	सतियां ६	हिसार (उपसेवाकेन्द्र)
साध्वीश्री राजकुमारीजी }	नोहर		

५. केन्द्रशासित प्रदेश : चातुर्मासिक प्रवास १, संत २

१. मुनिश्री विनयकुमारजी	सरदारशहर	संत २	चण्डीगढ़

६. पंजाब प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ८, संत ८, सतियां २१

१. मुनिश्री विमलकुमारजी	तारानगर	संत ४	संगरूर
२. मुनिश्री देवेन्द्रकुमारजी	टमकोर	संत २	मानसामंडी
३. मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी	लाडनूं	संत २	समानामंडी
४. साध्वीश्री कनकश्रीजी	राजगढ़	सतियां ४	भटिण्डा
५. साध्वीश्री बसंतप्रभाजी	राजलदेसर	सतियां ४	लुधियाना
६. साध्वीश्री प्रज्ञावतीजी	बाव	सतियां ४	धूरी
७. साध्वीश्री कनकरेखाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	सुनाम
८. *साध्वीश्री प्रतिभाश्रीजी	गंगाशहर	सतियां ४	जगराओं

७. उत्तरप्रदेश प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १, सतियां ४

१. साध्वीश्री संगीतश्रीजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	कानपुर

८. गुजरात प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १३, संत १०, सतियां ४२

१. मुनिश्री उदितकुमारजी	सरदारशहर	संत ४	उधना
२. मुनिश्री कुलदीपकुमारजी	सरदारशहर	संत २	तेरापंथ भवन, शाहीबाग, अहमदाबाद
३. मुनिश्री मदनकुमारजी	समदड़ी	संत २	पश्चिम अहमदाबाद
४. *मुनिश्री निकुंजकुमारजी	बाव	संत २	भुज
५. साध्वीश्री रामकुमारीजी	सरदारशहर	सतिया ५	कांकरिया-मणिनगर, अहमदाबाद
६. साध्वीश्री मधुबालाजी	मोमासर	सतियां ४	आशीर्वाद पेलेस, भटार, सूरत
७. साध्वीश्री सरस्वतीजी	हांसी	सतियां ७	अर्हम्कुंज, शाहीबाग, अहमदाबाद
८. साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी	सुजानगढ़	सतियां ४	खेडब्रह्मा
९. साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी	सुजानगढ़	सतियां ६	सिटिलाइट, सूरत
१०. साध्वीश्री हिमश्रीजी	सरदारशहर	सतियां ५	पर्वतपाटिया, सूरत
११. साध्वीश्री सम्यक्प्रभाजी	सरदारशहर	सतियां ३	कामरेज, सूरत
१२. साध्वीश्री सोमयशाजी	गंगाशहर	सतियां ४	बारडोली
१३. साध्वीश्री मंजुयशाजी	बीदासर	सतियां ४	बड़ौदा

९. मध्यप्रदेश प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास २, संत ३, सतियां ९

१. मुनिश्री मुनिसुव्रतकुमारजी	बीदासर	संत ३	पेटलावद
२. साध्वीश्री उर्मिलाकुमारीजी }	गंगाशहर	सतियां ९	इन्दौर
साध्वीश्री लब्धिश्रीजी }	अहमदाबाद		

१०. बंगाल प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास २, संत ५

१. मुनिश्री प्रशान्तकुमारजी	उदासर	संत २	सिलीगुड़ी
२. मुनिश्री जिनेशकुमारजी	जसोल	संत ३	दक्षिण कोलकाता

११. बिहार प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १, संत २

१. मुनिश्री रमेशकुमारजी	सरदारशहर	संत २	गुलाबबाग

१२. असम प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १, सतियां ४

१. साध्वीश्री स्वर्ण रेखाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	गुवाहाटी

१३. कर्नाटक प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ५, संत १०

१. मुनिश्री हिमांशुकुमारजी	असाढ़ा	संत २	गांधीनगर, बैंगलुरु
२. *मुनिश्री पुलकितकुमारजी	लोणार	संत २	बल्लारी
३. *मुनिश्री रश्मिकुमारजी	गंगाशहर	संत २	मैसूरु
४. मुनिश्री सुधाकरजी	राजलदेसर	संत २	शिवमोग्गा
५. मुनिश्री दीपकुमारजी	राजगढ़	संत २	विजयनगर, बैंगलुरु

१४. तमिलनाडु प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ३, सतियां ११

१. साध्वीश्री शिवमालाजी	टमकोर	सतियां ४	ट्रिप्लीकेन, चेन्नई
२. *साध्वीश्री गवेषणाश्रीजी	समदड़ी	सतियां ४	तिरुपुर
३. साध्वीश्री लावण्यश्रीजी	के.जी.एफ.	सतियां ३	साहूकारपेट, चेन्नई

१५. आन्ध्रप्रदेश प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १, सतियां ६

१. साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी	मोमासर	सतियां ६	सिकन्दराबाद-हैदराबाद

नेपाल देश : चातुर्मासिक प्रवास २, संत ५

१. मुनिश्री ज्ञानेन्द्रकुमारजी	लाडनूं	संत ३	विराटनगर
१. *मुनिश्री आनन्दकुमारजी	कालू	संत २	वीरगंज

नोट :–

१. (*) जिन नामों के आगे (*) लगाया हुआ है, वे अग्रणी नहीं हैं, मात्र व्यवस्था आदि का दायित्व फिलहाल उनके पास है।

भारत के १५ प्रान्तों में एवं नेपाल में चातुर्मासिक प्रवास १२५, संत सिंघाड़े ३९, सतियों के सिंघाड़े ८६, संत १६०, सतियां ५६९, कुल ७२९

श्रमणश्रेणी

भारत प्रवास ६, समणी ४१

महाराष्ट्र

१. समणी अक्षयप्रज्ञाजी	टापरा	समणी १५	बृहत्तर मुंबई

राजस्थान

१. समणी नियोजिका अमलप्रज्ञाजी	पचपदरा	समणी १७	जैन विश्व भारती, लाडनूं

उड़ीसा

१. समणी भावितप्रज्ञाजी }	समदड़ी	समणी ३	कटक
समणी संघप्रज्ञाजी }	चाड़वास		
२. समणी विपुलप्रज्ञाजी	समदड़ी	समणी २	बगुमुंडा

छत्तीसगढ़

१. समणी ज्योतिप्रज्ञाजी	नोहर	समणी २	रायपुर

हरियाणा

१. समणी जयन्तप्रज्ञाजी	गंगाशहर	समणी २	सिरसा

विदेश प्रवास ६, समणी १२

१. समणी मधुरप्रज्ञाजी	भीनासर	समणी २	ह्युस्टन
२. समणी निर्वाणप्रज्ञाजी	झाबुआ	समणी २	काठमाण्डो
३. समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी	टमकोर	समणी २	मियामी
४. समणी कमलप्रज्ञाजी	टिटिलागढ़	समणी २	न्यूजर्सी
५. समणी मलयप्रज्ञाजी	टिटिलागढ़	समणी २	लंदन
६. समणी जिनप्रज्ञाजी	सरदारशहर	समणी २	ओरलेण्डो

कुल समणी ५३

● विशेष दिवस : विक्रम संवत् २०८० ●

१. **आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस**	आषाढ़ शुक्ला १३	१ जुलाई २०२३
२. **चातुर्मासिक पक्खी**	आषाढ़ शुक्ला १४	२ जुलाई २०२३
३. **२६४वां तेरापंथ स्थापना दिवस**	आषाढ़ पूर्णिमा	३ जुलाई २०२३
४. **श्रीमज्जयाचार्य महाप्रयाण दिवस**	भाद्रपद कृष्णा १२	११ सितम्बर २०२३
५. **पर्युषण प्रारंभ दिवस**	भाद्रपद कृष्णा १३	१२ सितम्बर २०२३
६. **पर्युषण पक्खी**	भाद्रपद कृष्णा ३०	१४ सितम्बर २०२३
७. **संवत्सरी महापर्व**	भाद्रपद शुक्ला ४	१९ सितम्बर २०२३
८. **कालूगणी महाप्रयाण दिवस**	भाद्रपद शुक्ला ६	२१ सितम्बर २०२३
९. **विकास महोत्सव**	भाद्रपद शुक्ला ९	२४ सितम्बर २०२३
१०. **२२१वां भिक्षु चरमोत्सव**	भाद्रपद शुक्ला १३	२७ सितम्बर २०२३
११. **नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान**	आश्विन शुक्ला १ से ९	१५ अक्टूबर से २३ अक्टूबर २०२३
१२. **भगवान् महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस**	कार्तिक अमावस्या	१३ नवम्बर २०२३
१३. **आचार्यश्री तुलसी का ११०वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)**	कार्तिक शुक्ला २	१५ नवम्बर २०२३
१४. **चातुर्मासिक पक्खी**	कार्तिक पूर्णिमा	२७ नवम्बर २०२३

● विशेष कार्यक्रम : वि.सं. २०८० ●

१. **उपासक शिविर**	७-१७ जुलाई २०२३
२. **कन्या मंडल अधिवेशन**	२३-२५ जुलाई २०२३
३. **किशोर मंडल अधिवेशन**	२८-३० जुलाई २०२३
४. **बारहव्रती सम्मेलन**	२९ जुलाई २०२३
५. **तेरापंथ N.R.I. समिट**	५,६ अगस्त २०२३
६. **सभा प्रतिनिधि सम्मेलन**	१२-१४ अगस्त २०२३
७. **बेटी तेरापंथ की**	१९,२० अगस्त २०२३
८. **समण संस्कृति संकाय दीक्षान्त समारोह**	२२-२४ अगस्त २०२३
९. **तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अधिवेशन**	२६,२७ अगस्त २०२३
१०. **मेधावी छात्र सम्मान सम्मेलन**	२,३ सितम्बर २०२३
११. **ज्ञानशाला दिवस**	३ सितम्बर २०२३
१२. **जैन विश्व भारती अधिवेशन**	४,५ सितम्बर २०२३
१३. **प्रशासनिक सेवा अधिकारी सम्मेलन**	९,१० सितम्बर २०२३
१४. **ज्ञानशाला दीक्षांत समारोह**	२३-२५ सितम्बर २०२३
१५. **अणुव्रत लेखक सम्मेलन**	२६,२७ सितम्बर २०२३
१५. **जैन संस्कारक सम्मेलन**	२८,-२९ सितम्बर २०२३
१७. **प्रेक्षाध्यान दिवस**	३० सितम्बर २०२३
१८. **अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह**	१-७ अक्टूबर २०२३
१९. **अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अधिवेशन**	७-९ अक्टूबर २०२३
२०. **स्वर संगम**	२२,२३ अक्टूबर २०२३
२१. **अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद अधिवेशन**	२७-२९ अक्टूबर २०२३
२२. **अणुव्रत अधिवेशन**	१८-२० नवम्बर २०२३

आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, नंदनवन

ठाणे घोडबंदर रोड़, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे, ठाणे टोल नाका, सी एन रॉक होटल,
मीरा रोड़ ईस्ट, मुम्बई, महाराष्ट्र-401104

व्यक्ति प्रयोग और पुरुषार्थ द्वारा क्रोध पर नियंत्रण करने का प्रयास करे, यह श्रेय का मार्ग है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानावरणीय कर्म बंध के कारणों को जानकर उनसे बचने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन-मुंबई

२६ जुलाई २०२३

शान्तिदूत महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रस्सावादन कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में आठवें शतक के नौंवे उद्देशक में कर्मवाद का सिद्धांत और ८ कर्म के बारे में बताया गया है। यहां प्रश्न रखा गया है कि ज्ञानावरणीय कर्म प्रयोग का बंध किस कर्म के उदय से होता है। उतर दिया गया- इसके सात कारण हैं- जैसे ज्ञान के प्रतिकूल आचरण, ज्ञान की अवहेलना, ज्ञानग्रहण में अंतराय देना, ज्ञान की अवज्ञा करना आदि कारणों से ज्ञानवरणीय कर्म का बंध होता हैं। भगवती सूत्र में वर्णित इन सातों कारणों को जानकर ज्ञानवरणीय कर्म बंध से बचने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान व ज्ञानी की अवहेलना न करें, उनका सम्मान करें। ज्ञान के प्रति विनय का भाव हो। ज्ञानदाता के प्रति विनय और सम्मान का भाव हो। ज्ञान व ज्ञानदाता के प्रति प्रमोद भावना रखें। ज्ञान प्राप्ति में सहयोग देवें। यह सब करने से ज्ञानावरणीय कर्म की निर्जरा हो सकेगी, हमारा ज्ञान बढ़ सकेगा। लाभ, बुद्धि, भोग बुरा नहीं होता। इनके उपयोग में असंयम और दुरूपयोग करना बुरा होता है। बुद्धि तो अपने आप में क्षयोपशम भाव है।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा ज्ञानशाला के माध्यम से एवं जैन विश्व भारती संस्थान के द्वारा ज्ञान के क्षेत्र में विकास का प्रयास किया जाता है। जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट से अनेक चारित्रात्माएं बीए, एमए, पीएचडी आदि अध्ययन कर रही है। समणियां तो वहां समुन्द्र में ही बैठी है। साध्वी प्रमुखाश्रीजी, साध्वीवर्याजी एवं मुख्य मुनि ने भी वहां से स्नाकोत्तर डिग्रीयां हासिल की है। आज अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा श्रुतोत्सव आयोजित है। यह भी ज्ञान के विकास में सहयोग का माध्यम है। इस उपक्रम से अनेक भाई-बहिनें ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। कुछ साध्वियां भी इस उपक्रम से जुड़ी है। जैन विश्व भारती आगम मंथन प्रतियोगिता से एवं समण संस्कृति संकाय से ज्ञान बढ़ाने में सहायक बन रही है। इस प्रकार अनेक माध्यमों से ज्ञान के विकास के प्रयास करना चाहिये।

पूज्यवर ने अभातेममं के श्रुतोत्सव के बारे में आशीर्वचन प्रदान कराते हुए फरमाया कि पिछले वर्षो से अभातेममं द्वारा ज्ञानाराधना का कोर्स चलाया जा रहा है। यह श्रुत की आराधना का अच्छा उपक्रम है। अध्ययन करने वालों में ज्ञान का अच्छा विकास हो सकता है। यह उपक्रम अच्छी तरह चलता रहे। सरदारशहर का गोठी परिवार ज्ञान के विकास से अच्छा जुड़ा रहा है। महिला मंडल अच्छा कार्य करती रहे। डिग्री धारक अपने ज्ञान का उपयोग दूसरों को भी पढ़ाने में करते रहें।

कालूयशोविलास का आस्वादन कराते हुए पूज्यवर ने पूज्य कालूगणी के साथ उदयपुर के महाराजा के मिलन से उदयपुर में हुई प्रतिक्रियाओं के प्रसंग को समझाया।

तपस्या के प्रत्याख्यान

पूज्यवर ने ईशा बोरदिया को ३२, सज्जन चपलोत को २६, अनिता ओस्तवाल को ११, मुकेश चोरड़िया, नीतू सिसोदिया व गोमती मेहता को ९, जैनम गादिया, कांता देवी कोठारी, रीतू मेहता, वीर कटारिया, पूजा कटारिया को ८ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने श्रुतोत्सव एवं इसके महत्व के बारे में जानकारी दी। इस पाठ्यक्रम के संपोषक सुमतिचंद गोठी ने नये पाठ्यक्रम की फाइल पूज्यवर को निवेदित की।

दिवगंत मुनि शांतिप्रियजी की स्मृतिसभा आयोजित

पूज्यवर ने मुनि शांतिप्रियजी के जीवन की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करवाते हुए फरमाया कि उनको २७ मई २०२३ को संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया था। अंतिम समय में चौविहार संथारा करवाया गया था। ५६ दिन का लगभग संथारा आया था। २१ जुलाई को संथारा सीज गया था। पहले उपासक भी थे। पूज्यवर ने दिवंगत मुनिश्री के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना कराते हुए मध्यस्थ भावना के रूप में चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी, मुख्य मुनिश्री ने दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना अभिव्यक्त की। मुनि अक्षय प्रकाशजी, मुनि कोमलकुमारजी, मुनि मृदकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी एवं मुनि गौरवकुमारजी ने भी दिवंगत मुनिश्री की आत्मा के प्रति अपनी मंगल मंगलभावना अर्पित की।

मुनि शांतिप्रियजी के संसारपक्षीय पुत्र उपासक विनोद बोरदिया, रतनलाल मेहता, समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने भी आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

अर्हम्

:: मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ::

जो शांति सुधा बरसा गए रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।
जन-जन का मन हरसा गए रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

तज मोह और मद माया, माटी की समझ कर काया।
तन-मन समता सरसा गए रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

लेकर अंतिम वय दीक्षा, कर ली थी स्वयं समीक्षा।
अनशन में पूर्ण तितिक्षा रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

ना चाह थी जीना-मरना, बस भव सागर अब तरना।
तप संयम से नहीं डरना रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

दो पाँच मिले सुखकारा, पचपन दिन का संथारा।
हिम्मत से पार उतारा रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

मुनि शांति प्रिय का अनशन,देता अनुपम उद्‌बोधन।
भरता मन में नव पुलकन रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

जय महाश्रमण गुरुवर का, सान्निध्य मिला पारस का।
श्री सिद्धप्रज्ञ मुनिवर का रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

चैतन्य 'अमन' गुण गाएँ, श्रद्धा से शीष झुकाएँ।
प्रबोध शोध कर पाए रे, (मुनि) शांति प्रिय सुखकार।।

(लय : कैसी वह कोमल----)

इम्पेक्ट 360 डिग्री 'अस्तित्व की पहचान, एक नई उड़ान' कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई द्वारा साध्वी लावण्यश्रीजी के सान्निध्य में राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया की गरिमामय उपस्थिति में इम्पेक्ट ३६० डिग्री 'अस्तित्व की पहचान, एक नई उड़ान' विषयक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट में आयोजित किया गया। समुपस्थित जनमेदनी को सम्बोधित करते हुए साध्वी लावण्यश्रीजी ने कहा कि घड़ी की सूई अविराम चलती रहती है और वह प्रेरणा देती है कि समय बितता जा रहा है, उसका सदुपयोग करें। क्षितिज पर पहुंचने के लिए लक्ष्य का सही निर्धारण होना जरूरी है, सोच सकारात्मक होना आवश्यक है। सकारात्मक विचार होने पर शरीर भी स्वस्थ रहता है। दूसरों पर प्रभाव डालने से पूर्व स्वयं का स्वयं पर प्रभाव होना जरूरी है। उसके लिए जरूरी है- सदैव खुशरहें।

अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने इम्पेक्ट विषय और लोगों की विवेचना करते हुए कहा कि इम्पेक्ट का अर्थ होता है प्रभाव, परिणाम। स्वयं पर अपना प्रभाव मजबूत होने पर परिणाम सुखद आते हैं। हमारा लक्ष्य, गोल, परपज सही होने पर हमारी लाइफ स्ट्रोंग बनेंगी। हमारी बोलचाल, हमारी सोच, हमारे आचार-विचार, हमारे कार्य करने की शैली सही होने पर हम परिवार, समाज, देश की सामाजिक, आर्थिक, भौतिक विकास में सहयोगी बन सकते हैं। महिलाओं को अपने फील्ड ऑफ वर्क के मूल्य को समझना चाहिए। अध्यक्ष महोदया ने हर मुश्किल का हल होगा, आज नहीं तो कल होगा कविता से प्रेरणा दी।

इससे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा का महिला मण्डल की बहिनों द्वारा तिलक लगाकर स्वागत किया गया। साध्वीवृन्द के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ। तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण हुआ। तेरापंथ महिला मण्डल अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। अभातेममं राष्ट्रीय सदस्या मंजुला डुंगरवाल ने साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन किया। माला कातरेला ने 'अस्तित्व की पहचान-एक नई पहचान' एवं शालिनी लूंकड़ ने 'सक्षम महिला-सक्षम समाज' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रथम सत्र का कुशल संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। कार्यशाला संयोजिका संगीता खटेड़ ने नीलम सेठिया का परिचय दिया। कार्यशाला के प्रायोजक विजयराज कटारिया परिवार का सम्मान किया गया।

कंचन भण्डारी ने आभार ज्ञापन दिया। सहसंयोजिका सुमन बरमेचा के साथ महिला मण्डल की बहनों ने इस कार्यशाला को सुन्दर स्वरूप प्रदान किया। प्रथम सत्र में तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड, साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड के मुख्य न्यासी विमल चिप्पड़ सहित अन्य संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं श्रावक समाज की विशेष उपस्थित रही। जीव हिंसा, पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेकों भाई बहनों ने सिल्क, लैदर से बनी वस्तुओं का उपयोग नहीं करने के लिए प्रत्याख्यान किये।

शोध कार्य में गहराई होनी चाहिए। इसमें डाक्टरेट की उपाधि मिल जाए, ठीक है, पर मूल लक्ष्य तलस्पर्शी अध्ययन होना चाहिए।
-आचार्यश्री महाश्रमण

कन्यामंडल अधिवेशन की विस्तृत रिपोर्ट ...

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल के १६वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'उजाला - बी द लाईट, स्प्रेड द लाईट' का दिनांक २३-२४-२५ जुलाई २०२३ को नंदनवन, मुम्बई में भव्य आयोजन हुआ।

आचार्यप्रवर ने प्रथम सत्र में ही मानसिक औज आहार कन्याओं को प्रदान करवाया था। कन्याएँ आध्यात्मिक मूल्यों के साथ पारिवारिक संस्कारों के मूल्य को भी जीवन में उतारें।

अधिवेशन के प्रथम दिवस के प्रथम सत्र में के शुभारम्भ में अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने स्वागत वक्तव्य देते हुए पूज्य गुरुदेव से कन्याओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान कराने का निवेदन किया। पूज्य गुरुदेव ने कृपा करके कन्याओं को अमृत पाथेय प्रदान किया। सूरत कन्या मंडल ने पुराने गीतों की प्रस्तुति दी। जिज्ञासा समाधान सत्र में कन्याओं ने अपने आराध्य गुरुदेव से तत्व ज्ञान संबंधी कई प्रश्न किए जिनका बहुत सुंदर सटीक आध्यात्मिक समाधान पूज्य गुरुदेव ने कन्याओं को प्रदान किया। एक घंटे का गुरु से संवाद का अनुपम अवसर कन्याओं को प्राप्त हुआ। कन्या प्रतिवेदन श्री चरणों में निवेदित किया गया।

द्वितीय चरण 'ग्लिटरिंग स्टेशन' में 'स्ट्रीट ऑफ बीट' का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धेय साध्वी प्रमुखाश्रीजी एवं श्रद्धेय साध्वीवर्याजी ने पधारकर बेटियों का उत्साहवर्धन किया। जैन धर्म एवं तेरापंथ धर्म के सिद्धांत देश के विभिन्न कलाओं एवं परम्पराओं की प्रस्तुति एवं 'मांइड सिमुलेटिंग गेम' का आयोजन किया गया। वहां उपस्थित श्रावक श्राविकाओं के अलावा चारित्र आत्माओं ने भी आध्यात्मिक ज्ञान के स्टाल का अवलोकन किया और उसे सराहा।

इसके अलावा परेड, लघु नाटिका, नुक्कड़ नाटिका, भजन कार्यक्रम इस सत्र के मुख्य आकर्षण रहे। सहमंत्री निधि सेखानी, पूर्व महामंत्री तरुणा बोहरा एवं डॉ वन्दना बरड़िया के सार्थक श्रम से यह शो सफल रहा, इस कार्यक्रम में ३ घंटे की समयावधि में लगभग ३००० लोगों ने हिस्सा लिया।

तीसरे सत्र 'स्पार्कलिंग स्टेशन' की शुरुआत नोएडा कन्यामंडल के मंगलाचरण से हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ने देश विदेश से आई हुई सभी कन्याओं का स्वागत किया। परिचय सत्र में सभी कन्याओं ने अपने क्षेत्र का परिचय दिया। 'बी द लाईट, स्प्रेड द लाईट' में राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने ऑनलाइन पोलिंग के द्वारा सभी कन्याओं से सवाल पूछे। कन्याओं ने इसमें बहुत उत्सुकता से भागीदारी निभाई। राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरसरिया ने आगामी कार्यक्रम की रूपरेखा बताई। उपलब्धि दर्पण पर राष्ट्रीय कन्यामंडल की राष्ट्रीय प्रभारी अर्चना भंडारी ने दो वर्षों में सभी क्षेत्रों की कन्या मंडल के कार्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन सुश्री नेहा डूंगरवाल, सेलम ने किया।

लाइटहाउस आफ लॉजिक्स- अगले दिन सुबह के सत्र में कन्या मंडल को १० ग्रुप्स में बांट दिया गया। अलग अलग १० साध्वीवृंद ने उन्हें प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए जिज्ञासा को समाहित किया। उसके बाद दो अलग-अलग ग्रुप में साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी एवं साध्वीवर्याजी ने महती कृपा करके मंगल उद्‌बोधन प्रदान किया। उन्होंने दीर्घ श्वास प्रेक्षा, अच्छी पुस्तकों का अध्ययन, मोबाइल का प्रयोग कम करना, जंक फूड का सेवन न करना , श्रमशीलता को महत्व देने की शिक्षा प्रदान की। तत्पश्चात बेटियों ने अपनी जिज्ञासा और समस्या का समाधान प्राप्त किया।

द्वितीय दिवस के दूसरे सत्र 'ग्लिमिंग स्टेशन' का शुभारम्भ सूरत कन्यामंडल के मंगलाचरण से हुआ। 'जैनिज्म एंड जेन नेक्स' विषय पर मोटिवेशनल स्पीकर डॉ दिलीप जैन ने सभी कन्याओं को कैरेक्टरिस्ट ऑफ द नेक्स्ट जेनरेशन, अहिंसा, अनेकांत, सत्य, अपरिग्रह, विवेक, आदि विषय पर प्रशिक्षण दिया।

'इम्प्रोम्पटू टेबल टॉपिक्स' विषय पर राष्ट्रीय सहमंत्री निधि सेखानी व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या वंदना बरड़िया ने सभी कन्याओं को अलग अलग टॉपिक्स जैसे कन्यादान, फूड, सोशल मीडिया, ड्रेसअप, फैशन आदि विषय दिए। जिन पर कन्याओं ने अपनी शानदार प्रस्तुतियां दी।

राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने सभी कन्याओं और कन्यामंडल प्रभारियों के सवालों का समाधान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन भावना बोथरा -कोयंबटूर ने किया। 'राइस एंड साइन' में महामंत्री मधु देरासरिया ने कन्याओं को आध्यात्मिक विकास और आंतरिक उजाले को कैसे प्राप्त किया जाए, अर्हत वंदना के सूत्रों के माध्यम से उन्हें बहुत ही सुंदर तरीके से समझाया।

द्वितीय दिवस 'लुमिनस स्टेशन' के सत्र में 'अस्तित्व की पहचान - एक नई उड़ान में राजेश कुमार व राजश्री ठाकुर ने सभी कन्याओं के सवालों के जवाब दिए और जिंदगी में हम कैसे खुद को मजबूत बनाकर, खुद में खुश रहकर और सभी परिस्थितियों में कैसे खुद को खुश रखें ऐसी कई सकारात्मक बातें बताई। कार्यक्रम का कुशल संचालन तृप्ति कोठारी गदग ने किया।'

'वायब्रेंट स्टेनशन' ट्रस्टी सूरज जी बरड़िया के द्वारा भक्तामर एवं नमस्कार महामंत्र के मंत्रों का सही उच्चारण एवं अर्थ बताया और विविध समस्याओं के निवारण के लिए मंत्र का उपयोग कैसे हो इस पर उन्होंने बहुत ही सुंदर प्रशिक्षण दिया।

अगले सत्र 'गलोविंग स्टेशन' कन्या मंडल के कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उन्हें मोमेंटो एवं सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

इस सत्र के अंत में निधि सेखानी एवं जयश्री जोगड़ द्वारा ट्रेजर हंट प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। देश विदेश से लगभग ६२ क्षेत्रों की ५२५ से अधिक कन्याएं अधिवेशन में संभागी बनी।

प्रभाव क संथारे का गरिमापूर्ण समपन

बीदासर

राजस्थान के जाने माने क्षेत्र बीदासर के निवासी वर्तमान में हैदराबाद प्रवासी भंवरलाल बोथरा सुपुत्र स्व. चौथमल बोथरा दत्तक पुत्र स्व सोहनलाल बोथरा का ३२ दिनों के तिवीहारी अनशन एवं २ घंटे ४१ मिनट के चौविहारी अनशन में स्वर्गारोहण हो गया। वे ८०वें वर्ष में प्रवेश कर चुके थे।

यहां गौरतलब है कि बीदासर के इस जाने माने बोथरा परीवार की तीन पीढ़ियों में यह संभवतः दसवां संथारा था। किसी एक परीवार में संथारे के इतने बड़े चैन का होना जहां गौरव की बात है वहां शोध का विषय भी है कि ऐसा उदाहरण तेरापंथ धर्मसंघ में अन्यत्र है या नहीं।

आप शासनसेवी, तेरापंथ विकास परिषद् के सदस्य पदमचंद पटावरी के साले थे। आपके अनुज पारस मल बोथरा वर्तमान में राजसमंद में रह रहे थे। आपके दो पुत्र संजय, सुनील, क्रमशः पटना व हैदराबाद में व्यवसायरत है।

आपकी बैंकुंठी यात्रा ५ जुलाई को एवं स्मृति सभा एवं शोक सभा निवारण ७ जुलाई २३ को श्रद्धेया डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन सिकन्दराबाद में संपन्न हुआ।

शिक्षण संस्थानों से महत्वपूर्ण अनुबन्ध के साथ जीवन विज्ञान चिन्तन-गोष्ठी सम्पन्न

मुम्बई, १९ जुलाई २०२३

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान चिन्तन संगोष्ठी, आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास स्थल नंदनवन, मुम्बई में उपस्थित संभागियों को संबोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि 'जीवन विज्ञान का उपक्रम परम पूजनीय अणुव्रत अनुशास्ता अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी के समय में प्रारम्भ हुआ था। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का पथदर्शन, निर्देशन उसमें मानो जुड़ा हुआ रहा और आज जीवन विज्ञान ने भी कुछ यात्रा की है, स्थान परिवर्तन भी किया है। कभी यह जीवन विज्ञान जैन विश्व भारती के तत्वावधान में चला करता था, आज भी विश्व भारती तो है पर 'जैन' की जगह 'अणुव्रत' जुड़ गया है। स्थान भले बदले पर तत्व तो वही है। जीवन विज्ञान अभी अणुव्रत विश्व भारती का एक आयाम बना हुआ है। जो जैन श्वेताम्बर तेरापंथ से जुड़े हुए विद्या संस्थान हैं, भले वे तेरापंथी सभाओं के द्वारा संचालित हो या व्यक्तिगत तेरापंथी समाज के लोगों से जुड़े हुए हों, जो भी हों वहां जीवन विज्ञान पर भी चिन्तन-मंथन हो सकता है।

जीवन विज्ञान चिन्तन-गोष्ठी में विभिन्न लोग उपस्थित हुए होंगे उनको जीवन विज्ञान के भी प्रयोग वहां लागू हो सके, काम में लिया जा सके। भले प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के रूप में शुरू हो, जो जैसे अनुकूलता हो वैसे चिन्तन-मंथन किया जा सकता है। आज का कार्यक्रम, चिन्तन-मंथन जो भी हो सके अच्छा हो यह मंगलकामना है। संगोष्ठी संभागियों को मुख्यमुनि मुनिश्री महावीरकुमारजी, मुनिश्री मननकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी के साथ साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी का भी प्रेरणात्मक उद्‌बोधन एवं पाथेय प्राप्त हुआ।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि सोसायटी को जीवन विज्ञान प्रकल्प का दायित्व मिला तब से पूर्व के कार्यकर्तागण और वर्तमान टीम ने इस कार्य को और अच्छे ढंग से आगे बढ़ाया है साथ ही आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार जी के साथ अनेकों चारित्रात्माओं एवं मुनिश्री धर्मेशकुमारजी का भी मार्गदर्शन हमें मिला है। आज की संगोष्ठी में ६ राज्यों के ६० विद्यालयों से लगभग ८० प्रतिभागियों के साथ मुम्बई क्षेत्र के अनेक कार्यकर्तागण भी उपस्थित रहे। अविनाश नाहर ने आह्वान किया कि बैठक में उपस्थित शिक्षण संस्थाओं के साथ तेरापंथ समाज के सभी शैक्षिक संस्थानों को अपने यहां जीवन विज्ञान को प्रारम्भ करना चाहिए।

जीव विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने बताया कि पूज्यप्रवर के आशीर्वचन एवं पाथेय पश्चात् अनेक शिक्षण संस्थाओं ने अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर कर अपने यहां जीवन विज्ञान को प्रारम्भ करने का संकल्प व्यक्त किया है साथ ही अनेक विद्यालयों से उपस्थित प्रतिनिधियों ने अनुबंध-पत्रक पर शीघ्र सक्षम पदाधिकारी द्वारा हस्ताक्षर करवा कर लौटाने की बात कही। राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी राकेश खटेड़ ने 'जीवन विज्ञान क्या, क्यों और कैसे' विषय पर पॉवर प्वाइंट के माध्यम से सांगोपांग प्रशिक्षण प्रदान किया।

संगोष्ठी में अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, माला कातरेला, जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय परामर्शक मूलचन्द नाहर, प्रकाशन मंत्री देवेन्द्र डागलिया, मध्यांचल संगठन मंत्री साधना कोठारी, जीवन विज्ञान अकादमी छत्तीसगढ़, मध्य-प्रदेश एवं कर्नाटक के राज्य संयोजक क्रमशः दानमल पोरवाल, सुरेश कोठारी, ललित आच्छा, जैन विश्व भारती अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, किशनलाल डागलिया, भीकमचन्द कोठारी 'भ्रमर', जीवन विज्ञान राष्ट्रीय टीम से कमल बैंगाणी, रीना गोयल, ममता श्रीश्रीमाल, नीरज बम्बोली, हनुमान मल शर्मा, अणुव्रत समिति, मुम्बई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, मंत्री राजेश चौधरी सहित अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

तीन पीढ़ी द्वारा एक साथ तपस्या का प्रत्याख्यान

चेन्नई

तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड, ट्रिप्लीकेन की आयोजना में एस़एच़जी़ तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी शिवमालाजी के सान्निध्य में तपोभिन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम प्रारंभ करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि मोक्ष प्राप्ति के चार मार्गो में से एक है- तप। व्यक्ति मन और इन्द्रियों पर अंकुश लगा कर ही तप के पथ पर चल सकता है। तप से जहां शारीरिक स्वास्थ्य की प्राप्ति तो हो सकती ही है, साथ में कर्म निर्जरा का बहुमूल्य साधन भी है। तप के साथ, स्वाध्याय, ध्यान की निरन्तरता भी बनी रहे।

मुथा परिवार की तीन पीढ़ियां तप का उपहार लेकर आई है। प्रकाश मुथा, उनके पुत्र मुकेश, पौत्र प्रज्ज्वल तप का उपहार लेकर आये हैं। सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना। कार्यक्रम में तेयुप के निर्देशन में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। इक्षु मुथा ने दादा, बड़े पापा, भाई के तप पर गीतिका से विचार व्यक्त किए। जैन विश्व भारती मुख्य न्यासी रमेश बोहरा, ट्रस्ट बोर्ड प्रबंध न्यासी सुरेश संचेती, सम्पतराज चोरड़िया इत्यादि ने तपस्वियों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विजयकुमार गेलड़ा ने किया।

गुरुकुलवास में दो साध्वियों के मासखमण की परिसम्पन्नता

नन्दनवन, मुंबई

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में साध्वी विशालयशाली ने प्रथम और साध्वी विशालप्रभाजी ने पंचम मासखमण तप की परिसम्पन्नता की। परम पावन आचार्यप्रवर ने दोनों ही साध्वियों को 'पारणक ग्रास' प्रदान किया एवं सुखपृच्छा की। वे क्षण उपस्थित चारित्रात्माओं के भीतर भी तपस्या की प्रेरणा भर रहे थे। इस अवसर पर साध्वी सुमतिप्रभाजी ने दोनों साध्वियों के प्रति मंगल भावाभिव्यक्ति करते हुए बताया कि साध्वी विशालयशाजी इससे पूर्व ८ तक की लडी सम्पन्न कर चुकी है और प्रतिवर्ष सावन महीने में एकान्तर तप करती है। इस बार गुरुदेव की ऊर्जा प्राप्त कर मासखमण तप का अनुष्ठान सम्पन्न कर अपने संकल्प को सफल कर लिया।

साध्वी विशालप्रभाजी ने इस लघु वय में इससे पूर्व ९ तक की लड़ी, १५, २६,३१,३६,४१ के वर्षीतप कर एक कीर्तिमान बनाया है। साध्वी सुमतिप्रभाजी ने पूज्यप्रवर द्वारा कलकत्ता और बेंगलुरू में साध्वी विशालप्रभाजी को प्रदत्त अमृत संदेशों का भी वाचन किया।

मुनि मननकुमारजी, मुनि नयकुमारजी और साध्वी हिमांशुप्रभाजी ने तप अनुमोदना की। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया- 'गुरुदेव की शक्ति से ही यह साध्वियां मासखमण जैसा महान तप अनुष्ठान कर पाई है। इनका आत्मबल और मनोबल भी दृढ़ है। तपस्या के साथ साथ इनके जप, स्वाध्याय, ध्यान आदि का क्रम भी बराबर चलता रहा।' इस अवसर पर साध्वीवृन्द एवं मुनिवृन्द ने पृथक-पृथक रूप से गीतों का संगान कर तप की वर्धापना की।

ज्ञातव्य है परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के शासनकाल में प्रतिवर्ष चातुर्मास में चारित्रात्माओं के द्वारा मासखमण तप किया जाता रहा है। इस वर्ष मुम्बई पावस में एक ही साझ की दो साध्वियों के एक साथ मासखमण तप विशेष आल्हाद और आश्चर्य के विषय रहे।

पारणे की पूर्वरात्रि में साध्वी प्रमुखाश्रीजी के प्रवास स्थल 'अनुकंपा भवन' में तप अनुमोदना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें साध्वियों के वर्गों द्वारा अनेक अभिनन्दन एवं अनुमोदन गीतों की भावपूर्ण प्रस्तुतियां हुई। आदरास्पद साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में दोनों साध्वियों के प्रति आध्यात्मिक प्रसन्नता एवं शुभाशंसा व्यक्त की। श्रद्धेया साध्वी प्रमुखाश्रीजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ और साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने दोनों साध्वियों को लिखित रूप से मंगल संदेश प्रदान किये।

दो नयी ज्ञानशालाओं का शुभारंभ

कलकत्ता पूर्वांचल

मुनि जिनेशकुमारजी के पावन प्रेरणा पाथेय से कोलकाता के श्याम नगर एवं दक्षिणधारी क्षेत्र में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकता-पूर्वांचल) ट्रस्ट के अंतर्गत दो नई ज्ञानशालाओं का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से किया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्रशिक्षिकाएं बच्चों के संस्कार निर्माण के उपक्रम से जुड़कर उत्साह से भरी हुई थी। जैन संस्कारक अनूप गंग ने जैन संस्कार विधि से दोनों ज्ञानशालाओं का विधिवत शुभारंभ करवाया। कोलकाता व दक्षिण बंगाल आंचलिक सहसंयोजक संजय पारख ने कहा कि संस्कारों के संवर्धन, संरक्षण व पल्लवन के लिए ज्ञानशाला जरुरी है। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चे संस्कार प्राप्त कर चहुंमुखी विकास कर सकते हैं।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा (कलकता पूर्वांचल) ट्रस्ट के अध्यक्ष हनुमानमल दूगड़, मंत्री बालचंद दूगड़, पूर्वांचल सभा ज्ञानशाला के संयोजक धीरज मालू, सह संयोजिका एवं प्रशिक्षका बबिता तातेड़, ममता मुथा, तेयुप पूर्वांचल कोलकाता के अध्यक्ष संदीप सेठिया, उपाध्यक्ष धनपत बरड़िया आदि सहित श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद् सूरत द्वारा सत्र २०२३-२४ के एमबीडीडी के अंतर्गत प्रथम रक्तदान शिविर का आयोजन शुभम हॉल, तेरापंथ भवन में स्मीमेर हॉस्पिटल टीम के सहयोग से किया गया, जिसमें ६२ रक्तदाताओं ने स्वैच्छिक रक्तदान कर इस मानव सेवा कार्य में अपनी भागीदारी निभाई।

इस अवसर पर तेयुप शाखा प्रभारी सुनील चंडालिया, एमबीडीडी राष्ट्रीय सहप्रभारी सौरभ पटावरी (तेयुप-उपाध्यक्ष) और निवर्तमान अध्यक्ष अमित सेठिया सहित तेयुप पदाधिकारीगण, सूरत एमबीडीडी टीम, परिषद के कार्यकर्ताओं, किशोर मंडल तथा श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

तेयुप का शपथ ग्रहण, मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला

हैदराबाद

तेयुप हैदराबाद के शपथ ग्रहण कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ मंगलप्रज्ञाजी द्वारा नवकार महामंत्र के उच्चारण से किया गया। भिक्षु प्रज्ञा मंडली द्वारा विजय गीत प्रस्तुत किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल ने नवमनोनीत अध्यक्ष निर्मल दूगड़ को शपथ दिलवाई। तत्पश्चात नवमनोनीत अध्यक्ष ने पदाधिकारीगण व कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलवाई। नवमनोनीत अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में सभी पधारे हुए श्रावक-श्राविकागण का स्वागत करते हुए कहा कि मुझे इस गौरवशाली संस्था का अध्यक्ष मनोनीत होकर कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। पद एक व्यवस्था है। मैं तो इस संस्था का एक साधारण कार्यकर्ता हूं जिसे आप सभी युवा साथियों ने इतना प्रेम और स्नेह देकर आज इस मुकाम तक पहुंचाया है। हम सभी को इस संस्था को सुदृढ़ बनाने में अपना पूरा योगदान देना है। मेरी पूर्ण कोशिश रहेगी की पूरी टीम को साथ लेकर तेयुप के त्रिकोणीय आयाम सेवा, संस्कार, संगठन के सभी क्षेत्रों में अपना श्रम देकर इस संस्था को एक नई ऊंचाई पर लेकर जाऊं। हमें गुरुदेव के इंगित की आराधना करते हुए सभी कार्य करने हैं।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों को साध्वीश्रीजी द्वारा मंत्र दीक्षा के संकल्प स्वीकार करवाये गये तथा वीतराग पथ कार्यशाला भी आयोजित हुई। साध्वी डॉ मंगलप्रज्ञाजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए अभातेयुप के निर्देश्यान में आयोजित मंत्र दीक्षा एवं वीतराग पथ कार्यशाला को संस्कारों के बीजारोपण के लिये महत्वपूर्ण उपक्रम बताया। उन्होंने तेयुप की नई टीम को संघ के संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए संगठन को नई ऊंचाई प्रदान करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान मंत्री नीरज सुराणा ने किया।

बारह व्रत कार्यशाला एवं सम्यक दर्शन कार्यशाला का हुआ मंगल प्रारंभ

उधना

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनि उदितकुमारजी के सान्निध्य में उधना में चल रही पच्चीस बोल कार्यशाला का समापन बारह व्रत कार्यशाला एवं सम्यक दर्शन रात्रिकालीन कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। इसमें विशाल संख्या में भाई बहन संभागी बन रहे हैं। कार्यशाला के शुभारंभ के अवसर पर मुनिश्री ने अपने प्रेरक उद्बोधन में बताया- 'मनुष्य भोग से नहीं किंतु त्याग से महान बनता है। मानव जीवन मिलना दुर्लभ बताया गया है। मानव जीवन मात्र भोग भोगने के लिए नहीं मिला है। अनेक भवों के सत्कर्मों एवं साधना के पश्चात मानव जीवन मिलता है। इसका उपयोग सेवा, सत्संग, परोपकार जैसे कार्यों में एवं धर्म आराधना करने में करना चाहिए।दुर्लभ मानव जीवन को मूल्यवान वही व्यक्ति बना सकता है जिसके जीवन में त्याग, प्रत्याख्यान है, छोटे-छोटे व्रतों को जो धारण करता है। त्याग प्रत्याख्यान के बिना सम्यकत्व भी नहीं मिलता और सम्यक्त्व के बिना मोक्ष प्राप्ति संभव नहीं है।'

मुनि अनंतकुमारजी ने प्राग उद्बोधन में मनुष्य को आत्म प्रशंसा से दूर रहकर आत्म खोज करने का एवं परनिंदा के स्थान पर आत्म आलोचना करने की सीख दी। मुनि ज्योतिर्मयकुमारजी ने सुंदर कथानक द्वारा जीवन को उर्ध्वगामी बनाने की प्रेरणा दी। मुनि रम्यकुमारजी ने जैन रामायण की गाथाओं की मधुर प्रस्तुति की। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री ने उधना कन्या मंडल को राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त पुरस्कारों की जानकारी दी।

भीलवाड़ा में ५६ दिन की संथारा साधना के साथ देवलोक गमन करने वाले मुनि शांतिप्रियजी की श्रद्धा, समर्पण और संघसेवा का विशेष उल्लेख करते हुए मुनिश्री ने उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना व्यक्त की। दिवंगत मुनि शांतिप्रियजी की संसारपक्षीय पौत्री नीलम बाफना ने अपने श्रद्धसिक्त भावों की प्रस्तुति दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अगस्त - 13 अगस्त, 2023

जिन लोगों के लिए साधु बनना संभव नहीं है, उन्हें कुछ अंशों में संयम को स्वीकारने का प्रयास करना चाहिए।
-आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप के तत्वावधान में स्थानीय शाखा परिषदों द्वारा मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

भुवनेश्वर

तेरापंथ युवक परिषद, भुवनेश्वर द्वारा सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला की गरिमामयी उपस्थिति में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। भुवनेश्वर ज्ञानशाला के ६ बच्चों को मंत्र दीक्षा का संकल्प करवाया गया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के ३३ बच्चों की उपस्थिति रही। ई लर्निंग ज्ञानशाला प्रोजेक्टर के माध्यम से बच्चों को अध्ययन करवाया गया। बच्चों को ज्ञानवर्धक गेम खिलाये गये। ज्ञानशाला प्रशिक्षकगण की भी उपस्थिति रही।

जसोल

शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी के सान्निध्य में पुराना ओसवाल भवन में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन हुआ। शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी ने मंगल उद्‌बोधन में कथानक के द्वारा सरल शब्दों में रोचक ढंग से बच्चों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि नियमित रूप से प्रतिदिन नवकार महामंत्र का जप, चारित्रात्माओं के दर्शन, ज्ञानशाला में जाना, सत साहित्य का पठन इन सबके द्वारा जीवन का सुंदर निर्माण संभव है। साध्वीश्री ने अभिभावकों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि बच्चे सहज, सरल, कोरे कागज के समान होते हैं। बच्चों के जीवन निर्माण के लिए संस्कार निर्माण पर ध्यान दें, यह आवश्यक है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। त्रिपदी वंदना दिव्यांश ढ़ेलडिया ने करवाई। साध्वी आरोग्ययशाजी ने वीतराग का विज्ञान विषय पर चार गति, आठ कर्म व भाव शुद्धि पर विस्तृत जानकारी दी साथ ही वर्तमान में संस्कारों की उपयोगिता पर बल देते हुए मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा कम्प्यूटर पर आधारित मंत्र दीक्षा की उपयोगिता पर बल प्रदान करने वाली एवं लघुनाटिका प्रस्तुत की गई। 'अर्हम अर्हम की वंदना फले' गीत पर बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में १४ बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, ज्ञानशाला प्रभारी संपतराज चौपड़ा, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका चंदा देवी चौपड़ा सहित वक्ताओ ने विचार व्यक्त किये। तेयुप कोषाध्यक्ष अभिनदंन ने अभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन तेयुप अध्यक्ष मनीष बोकड़िया ने किया।

विजयनगर

तेरापंथ युवक परिषद, विजयनगर द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन विजयनगर स्थित अर्हम भवन में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोखरणा एवं तेयुप राजाराजेश्वरीनगर अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया एवं मंत्र दीक्षा की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

मुनि काव्यकुमारजी ने मंत्र दीक्षा के बारे में विचार व्यक्त करते हुए प्रेरणा प्रदान की। मुनि दीपकुमारजी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा कि मंत्र दीक्षा बच्चों को संस्कारी बनाने का उपक्रम है। उन्होंने मंत्र दीक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अभिभावकों एवं बच्चों को पावन प्रेरणा दी। मुनिश्री ने बहुत रोचक तरीके से जिज्ञासा-समाधान के साथ नमस्कार महामंत्र की विवेचना करते हुए ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा प्रदान करवाई एवं प्रतिदिन मंत्रो के जप का नियम एवं मंत्र दीक्षा में उल्लेखित नियमों के संकल्प स्वीकार करवाये।

ज्ञानशाला विजयनगर, राजा राजेश्वरीनगर, कामाक्षीपाल्या, केंगेरी के बच्चों द्वारा नाटकों और गीतिका की बहुत ही सुंदर प्रस्तुतियां दी गई। इस अवसर पर अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत, अभातेयुप पुर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, सभा अध्यक्ष प्रकाश गाँधी, आरआरनगर अध्यक्ष छत्तरसिंह सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु गादिया, आर् आऱ नगर महिला मंडल अध्यक्षा सुमन पटावरी, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका मनीषा घोषल, वंदना भंसाली, पूनम दक आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

अभातेयुप से दिनेश मरोठी, अमित दक, डॉ आलोक छाजेड़, महावीर टेबा, तेजराज चोपड़ा, इंदर छाजेड, परिषद से पूर्व अध्यक्ष राकेश दुधोडिया, अशोक कोठारी, सम्पत चावत ,महेंद्र टेबा, अभिषेक कावड़िया, श्रेयांस गोलछा आदि सहित तेरापंथी सभा, तेयुप विजयनगर एवं आऱआऱ नगर, तेरापंथ महिला मंडल पदाधिकारी- गण, कार्यसमिति सदस्यगण, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकागण, किशोर मंडल, कन्यामंडल एवं श्रावक-श्राविका समाज की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में ज्ञानशाला के ज्ञानाथएँ बच्चों की सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन परिषद मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया एवं आभार ज्ञापन रौनक चौरड़िया ने किया। परिषद द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों को मंत्र दीक्षा किट एवं उपहार वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में विजयनगर ज्ञानशाला संयोजक मनीष श्यामसुखा एवं सहसंयोजक जितेश मांडोत, आऱआऱ नगर ज्ञानशाला संयोजक दीपक सुराणा एवं सहसंयोजक श्रेयांश बैंगानी का उल्लेखनीय श्रम रहा।

भीनासर

तेरापंथ युवक परिषद्-भीनासर द्वारा मुनि चैतन्यकुमारजी 'अमन' के सान्निध्य में बालक व बालिकाओं के लिए मंत्र-दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनि चैतन्यकुमारजी 'अमन' ने पाथेय प्रदान करते हुए कहा- बाल्यावस्था संस्कारों के निर्माण के लिये महत्त्वपूर्ण समय होता है। क्योंकि बचपन में प्राप्त संस्कारों के आधार पर ही भविष्य बनता है। मंत्र-दीक्षा संस्कार-निर्माण की पहली भूमिका है। जैसा कि ब्राह्मण परम्परा में यज्ञोपवीत किया जाता है, उसी प्रकार जैन धर्म में बालक-बालिकाओं को मंत्र दीक्षा दी जाती है। आज के युग में संस्कारों के परिष्कार की महत्ती आवश्यकता है क्योंकि अच्छे संस्कारों से ही अच्छी संस्कृति को गढ़ा जा सकता है। आज के इस इलेक्ट्रोनिक मीडिया के युग में बढ़ती हुई टेक्नोलॉजी के कारण बच्चों के संस्कार धूमिल हो रहे हैं और मोबाईल की बढ़ती हुई प्रवृत्ति शिक्षा और संस्कारों में नुकसान पैदा कर रही है। अतः समय रहते सुसंस्कारों पर ध्यान नहीं देने से बच्चे अभिभावकों के हाथों से निकल जाऐगें।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। बालक कुशल, अक्ष, गौरव ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष मोहित सेठिया ने आभार ज्ञापित किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका पिंकी कोचर ने संचालन किया। कार्यक्रम में विशाल सेठिया, सुमति पुगलिया, नवीन डागा, संदीप गुलगुलिया, युवराज बरमेचा आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

औरंगाबाद

मुनि अर्हतकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, औरंगाबाद द्वारा वीतराग पथ कार्यशाला एवं मंत्र दीक्षा का आयोजन हीरा काका प्रांगण में किया गया। सर्वप्रथम गौरव सेठिया ने मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। अभातेयुप क्षेत्रीय सहयोगी और तेयुप के अध्यक्ष अंकुर लुणिया ने समागत अतिथिगण एवं ज्ञानार्थियों का स्वागत किया। मुनि अर्हतकुमारजी ने राग से विराग की ओर बढ़ने हेतु मोह एवं मूर्च्छा को त्यागने की प्रेरणा दी एवं मंत्र दीक्षा के महत्व को रेखांकित किया। मुनि भरतकुमारजी ने भी तत्वज्ञान के माध्यम से प्रेरणा दी। बीड, औरंगाबाद और जालना की ज्ञानशालाओं ने अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रेरणावर्धक नाटिकाएं प्रस्तुत की। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत एवं अपने विचार प्रस्तुत किए। तेयुप मंत्री मयूर आच्छा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मीना सेठिया ने किया।

गंगाशहर

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका शासनश्री साध्वीश्री शशिरेखाजी एवं साध्वी ललितकलाजी के सान्निध्य में शांति निकेतन, गंगाशहर में तेयुप गंगाशहर द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थिओं के द्वारा मंगलाचरण से हुई। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने एक गीतिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किये। साध्वीद्वय ने नमस्कार महामंत्र के महत्व को समझाते हुए ज्ञानार्थियों को प्रेरणा प्रदान की तथा मंत्र दीक्षा के संकल्प स्वीकार करवाये। इस अवसर पर ज्ञानशाला गंगाशहर के लगभग २०० से अधिक ज्ञानाथएँ उपस्थित रहे। इस अवसर पर तेयुप गंगाशहर से चैतन्य रांका, देवेंद्र डागा, रजनीश गोलछा, रोहित बैद, ऋषभ लालाणी व समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

गुवाहाटी

साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ धर्मस्थल में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप साथियों के मंगलाचरण से हुआ। तेयुप गुवाहाटी के निवर्तमान अध्यक्ष मनीष सिंघी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में गुवाहाटी ज्ञानशाला, जीएस रोड और रिहाबाड़ी शाखा ने एक मंचन 'ज्ञानशाला कटघरे में' विषय पर रोचक प्रस्तुति दी। साध्वीश्रीजी बच्चों को मंत्र दीक्षा के संकल्प स्वीकार करवाते हुए प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। कार्यक्रम का सफल संचालन निवर्तमान मंत्री विकास झाबक ने किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ युवक परिषद द्वारा शासनश्री मुनि हर्षलालजी एवं मुनि यशवंत कुमारजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुनिश्री ने बच्चों को प्रेरणा प्रदान करते हुए नमस्कार मंत्र का महत्व बताया। तेरापंथी सभा, भीलवाड़ा के अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, मंत्री योगेश चंडालिया, तेयुप के अध्यक्ष सुरेश चोरड़िया, अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, गौतम दुग्गड़ एवं अन्य स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम की सफलता में ज्ञानशाला प्रभारी लक्ष्मीलाल सिरोहिया, सहप्रभारी नरेश नाहटा, संदीप दुग्गड़, कार्यक्रम प्रभारी लोकेश बोथरा एवं चंद्रेश सेठिया का सहयोग रहा। तेयुप मंत्री अशोक बड़ोला ने आभार ज्ञापन किया।

धर्म का थोड़ा अंश भी जीवन में आता है, तो वह आदमी को महान् भय से उबारने वाला होता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

फिट युवा-हिट युवा

कानपुर

अभातेयुप के द्वारा निर्देशित व तेयुप, कानपुर के तत्त्वावधान में फिट युवा-हिट युवा योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें योग प्रशिक्षक ओम प्रकाश द्वारा योग अभ्यास करवाया गया। इस कार्यक्रम में तेयुप, महिला मंडल व तेरापंथ सभा की सम्मिलित सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन संयोजक अमित पगारिया द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष दिलीप मालू ने आभार व्यक्त किया तथा योग प्रशिक्षक को साहित्यप्रदान कर सम्मानित किया। ४० गणमान्यजनों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया।

तप अनुमोदन कार्यक्रम

पर्वत पाटिया

साध्वी हिमश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, पर्वत पाटिया में सुश्राविका मंजुदेवी ढाबरिया के मासखमण तप एवं अन्य तपस्वियों के तप अनुमोदन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। उद्बोधन प्रदान करते हुए साध्वी हिमश्रीजी ने कहा- 'प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म बंधनों को तोड़ना चाहता है। इस प्रक्रिया में तपस्या का विशिष्ट स्थान है। तपस्या कर्म निर्जरा का अमोघ साधन है, सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा जीवन में वर्तमान में व्याप्त एवं भविष्य में आने वाली विविध समस्याएं तथा आधि, व्याधि और उपाधि से मुक्ति मिल सकती है। तपस्या अनंत शक्ति का स्त्रोत है। तपस्या के द्वारा आसक्ति पर विजय प्राप्त होती है। बहिन मंजु ढाबरिया ने संकल्प शक्ति को जगाते हुए मासखमण की तपस्या कर अपने कुल के साथ-साथ तेरापंथ धर्मसंघ का गौरव भी बढ़ाया है। साध्वी चैतन्ययशाजी ने ६ दिन की तपस्या कर दृढ़ मनोबल का परिचय दिया है। अन्य तपस्याओं के क्रम में राजेंद्र खाब्या एवं ११ वर्षीय बालक यश ने पखवाड़े (१५ दिन) की तपस्या मीठालाल जैन ने ११ दिन, भूमि जैन ने ६ दिन एवं बालक द्वीज तथा खुशी ने भी अट्ठाई की तपस्या कर गण गौरव को बढ़ाया है।'

शासनश्री साध्वी रमावतीजी ने कहा- 'तपस्या के द्वारा जीवन में आध्यात्मिकता का जागरण होता है। साथ ही मानसिक एकाग्रता, इंद्रिय संयम तथा स्वभाव परिवर्तन भी संभव है।' मासखमण तपस्या के संदर्भ में मुंबई से साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रेषित मंगल संदेश का वाचन साध्वी चैतन्ययशाजी ने किया। तेरापंथी सभा पर्वत पाटिया के उपाध्यक्ष संजय बोथरा ने तप अभिनंदन पत्र का वाचन किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष गौतम ढेलडिया, मंत्री प्रदीप गंग, तेयुप अध्यक्ष दिलीप चावत, मंत्री पवन बुच्चा, अणुव्रत विश्व भारती गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, पर्वत पाटिया तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा रंजना कोठारी, मंत्री चेष्टा जैन, पूर्व सभा अध्यक्ष ज्ञानचंद कोठारी, कुलदीप कोठारी एवं तपस्या के उपलक्ष में तपस्वियों के परिवारजनों द्वारा तप अनुमोदना की गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मुक्तियशाजी ने किया। साध्वीश्रीजी के मुखारविंद से मंजुदेवी ढाबरिया ने ३१ वें दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। अनेक भाई बहनों ने विविध तपस्या के संकल्प ग्रहण किए।

मुनिश्री शांतिप्रियजी के देवलोकगमन पर विशेष

जन्म जन्म का साथ

:: विनोद बोरदिया ::

संथारा साधक शान्तिप्रियजी की सुनो कहानी
सुन लो जीवंत कहानी ...
संकल्पों से भरी जिंदगी, पौरूष की है निशानी ...
संथारा साधक शान्तिप्रियजी ...

जुहारमलजी के प्रपौत्र, बोरदिया कुल उजियारे हो ऽऽऽ
पिता दिपचंद मां अंबा के 'शांति' नयान सितारे
जन्मभुमि मोवाड़ देवरिया, देवभुमि सुखदाई
संथारा साधक शान्तिप्रिय ... ।।

गुंज उठी उन्नीस बरस में शादी की शहनाई
जुवासीया ससुराल सहचरी सौभाग्य रतनबाई
मुन्ना विनोद, प्रकाश, विमल, से महक उठी फुलवारी
संथारा साधक शान्तिप्रिय ... ।।

संघ समर्पित श्रद्धानिष्ठ उपासक का गौरव पाए
तुलसी महाप्रज्ञ हृदय में, अपना स्थान बना पाए
रो रोम में हर पल बरते महाश्रमण जयकारी
संथारा साधक शान्तिप्रिय ... ।।

तत्वज्ञान के ज्ञाता, प्रवचन शैली थी अलबेली
प्रश्न पहेली सदा पुछते गीतों की रसरैली
ओजस्वी वाणी थी इनकी सबने खुब सराई
संथारा साधक शान्तिप्रिय ... ।।

अनशनधारी बनकर ही मैं इस दुनिया से जाऊं
तोड़ श्रृंखला आड करम की अजर अमर पद पाऊं
मनोकामना पूर्ण हुई पा गुरु आज्ञा शिरधारी
संथारा साधक शान्तिप्रिय ... ।।

मुनिश्री शातिप्रियजी की स्मृति सभा का आयोजन

कृष्णानगर, दिल्ली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमारजी के सान्निध्य में मुनिश्री शांतिप्रियजी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने उद्गार व्यक्त करते हुए फरमाया कि मुनि शांतिप्रियजी ने गृहस्थावास में रहते हुए भी अच्छी साधना और संघ प्रभावना में अपनी शक्ति का नियोजन किया था। उनकी जन्मभूमि देवरिया और कर्म भूमि डीसा थी। मेरा दोनों जगह जाना हुआ और उनके कार्यों की सुवास का अनुभव किया। उन्होंने उपासक बनकर लंबे समय तक अपने समय को सार्थक किया और अपने सुपुत्र को भी उपासक बनाया।

आसींद मर्यादा महोत्सव पर रात्रि में मेरी सेवा कर रहे थे, उस समय मैंने उनसे पच्चीस बोल प्रतिक्रमण सुना, कुछ गीत सुने, मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने उनसे पूछा कि दीक्षा की भावना है क्या? उन्होंने कहा आप दलाली करें, मैं तैयार हूं। मैं उन्हें युवाचार्य प्रवर के दर्शन करवाकर दीक्षा की दलाली करने लगा। तब युवाचार्य प्रवर ने फरमाया कि प्रतिक्रमण कंठस्थ कर लोगो क्या? पैदल विहार कर सकते हो क्या? कितने चल सकते हो? सारी बातों का सटीक उत्तर सुनकर युवाचार्यप्रवर आचार्यश्री के चरणों में पधारे और सारी बात निवेदन की। आचार्यप्रवर ने प्रतिक्रमण का आदेश प्रदान किया। जयपुर चातुर्मास में दीक्षा हो गई। दीक्षा के पश्चात् उनका विहरण मेवाड़ में ही होता रहा। मेरा उधर जाना नहीं हुआ परंतु प्रसन्नता है कि उन्होंने अंत में संथारा करके अपना काम सिद्ध किया अंत में उनको मुनि पारस कुमारजी और मुनि सिद्धप्रज्ञजी का शुभ संयोग प्राप्त हुआ। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती हुई चरम लक्ष्य को प्राप्त करे इसी भावना के साथ। अंत में चार लोगस्स का पूरी परिषद् में ध्यान करवाया।

शपथ ग्रहण समारोह

इचलकरंजी

तेयुप, अणुव्रत समिति एवं तेममं, इचलकरंजी का सत्र-२०२३-२४ कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कारक विकास सुराणा ने मंगल मंत्रों के साथ विधि पूर्ण करवाई। तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष महेश पटावरी, पूर्व अणुव्रत समिति अध्यक्ष विकास सुराणा एवं पूर्व महिला मंडल अध्यक्षा जयश्री जोगड़ ने तीनों संस्थाओं के नवनिर्वाचित अध्यक्षों को शपथ दिलवाई और उनके प्रति मंगलकामना प्रकट की।

अणुव्रत समिति, इचलकरंजी के अध्यक्ष पंकज जोगड़ ने सभी पदाधिकारियों और कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलवाई और उनके प्रति मंगलकामना प्रेषित की। उसी क्रम में महिला मंडल की अध्यक्षा शिल्पा बाफना ने सभी पदाधिकारी और कार्यकारिणी सदस्यों एवं कन्या मंडल सह-संयोजिका साक्षी बालर को शपथ दिलवाई और उन्होंने सभी को पेरणा दी और मंगलकामना प्रकट की। तेयुप, इचलकरंजी के अध्यक्ष विनोद भंसाली ने सभी पदाधिकारी और कार्यकारिणी सदस्यों एवं किशोर मंडल संयोजक अखिल चोपड़ा को शपथ दिलवाई और उनके प्रति मंगलकामना प्रकट की। विनोद भंसाली ने सारे सदस्यों को तेयुप के होने वाले कार्यक्रमों में उमंग और उत्साह से काम करने की और जुड़ने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष महेंद्र गिड़िया, मंत्री पुष्पराज संकलेचा एवं समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री संतोष भंसाली ने किया।

'तत्व ज्ञान प्रतियोगिता एवं मास्टर ऑफ माइंड क्विज' का आयोजन

ग्रीन पार्क, दक्षिण दिल्ली

'ज्ञान की चेतना जागे, पापों का अंधकार भागे' तर्ज पर दक्षिण दिल्ली तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में एवं साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में 'तत्त्व ज्ञान प्रतियोगिता एवं मास्टर ऑफ माइंड क्विज' का आयोजन किया गया। तत्त्व ज्ञान का आधार था–'जैन दर्शन का लोक' एवं मास्टर ऑफ माइंड क्विज का आधार था–२५ बोल। लगभग ४० भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। तेरापंथ सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, दक्षिण दिल्ली सभा के अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा सहित अनेक गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

तत्त्वज्ञान प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अनिषा गेलड़ा एवं निर्मला गेलड़ा, द्वितीय स्थान सुशील पटावरी एवं राहुल जैन एवं तृतीय स्थान में अंजना गेलड़ा एवं रोमी दुगड़ तथा मास्टर ऑफ माइंड बनी अंजना गेलड़ा। तेरापंथ सभा दक्षिण दिल्ली द्वारा सभी विजेताओं सहित सभी प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। तेरापंथ सभा के मंत्री यश बरमेचा, दिल्ली सभा मंत्री अरविंद दुगड़, प्रदीप जैन, गोविंद बाफना, मिलापचंद गेलड़ा, सुशील कुहाड़, निर्मल कोठारी आदि अनेक गणमान्य श्रावकों की उपस्थिति में साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी ने कहा कि ज्ञान प्रकाश है, सत्य मार्ग पर बढ़ने का विश्वास है।

संयम की चेतना जगाने का समय है चातुर्मास

सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन के प्रांगण में चातुर्मासिक पक्खी के अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि अध्यात्म पिपासु हर व्यक्ति चातुर्मास की चातक की तरह प्रतीक्षा करता है। पाँच पर्व तिथियों में चतुर्दशी का महत्त्व होता है और उसमें भी चातुर्मासिक चतुर्दशी का भी विशेष महत्त्व होता है। साध्वीश्री जी ने कहा कि यह समय बीतता जा रहा है, इसलिए हर क्षण का जागरूकता से उपयोग होना चाहिए। चातुर्मास का समय ज्ञान, ध्यान, तप, स्वाध्याय की आराधना का पवित्र समय होता है। त्याग के पथ पर आगे बढ़ने का दृढ़ संकल्प हो। चातुर्मास का समय हमारे भीतर संयम की चेतना जागृत करने का समय है।

हाजरी वाचन के अंतर्गत साध्वीश्री जी ने कहा कि मर्यादा हमारे लिए लक्ष्मण रेखाएँ हैं। एक गुरुनिष्ठा, एक गुरु आज्ञा हमारा प्राण है। चार तीर्थ की संभाल एकमात्र गुरु करते हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ का श्रावक समाज भी गुरुदृष्टि की आराधना करता है। हम सौभाग्यशाली हैं हमें तेरापंथ जैसा धर्मसंघ मिला है। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेरापंथ सभा द्वारा तपस्वी भाई नमन का सम्मान किया गया। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से तेरापंथ भवन में त्रिदिवसीय १३ घंटे का जप अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत का सामूहिक संगान किया। अंजु बैद ने संपर्क पखवाड़ा की जानकारी दी। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि हर व्यक्ति धर्माराधना करे, अपने चिंतन को सही तरीके से इस्तेमाल करे। चातुर्मास में हर व्यक्ति का मन अध्यात्म साधना की सौरभ से खिलता रहे। अठाई तप साधक नमन दुगड़ को पारिवारिक जनों ने गीत के द्वारा बधाई दी। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत के द्वारा चातुर्मास काल का लाभ लेने हेतु परिषद से आह्वान किया एवं तपस्वी नमन के तप का अनुमोदन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने किया।

शोध कार्य में गहराई होनी चाहिए। इसमें डाक्टरेट की उपाधि मिल जाए, ठीक है, पर मूल लक्ष्य तलस्पर्शी अध्ययन होना चाहिए।
-आचार्यश्री महाश्रमण

जैन दर्शन में आत्मा ही कर्मों की कर्ता और भोक्ता है : आचार्यश्री महाश्रमण

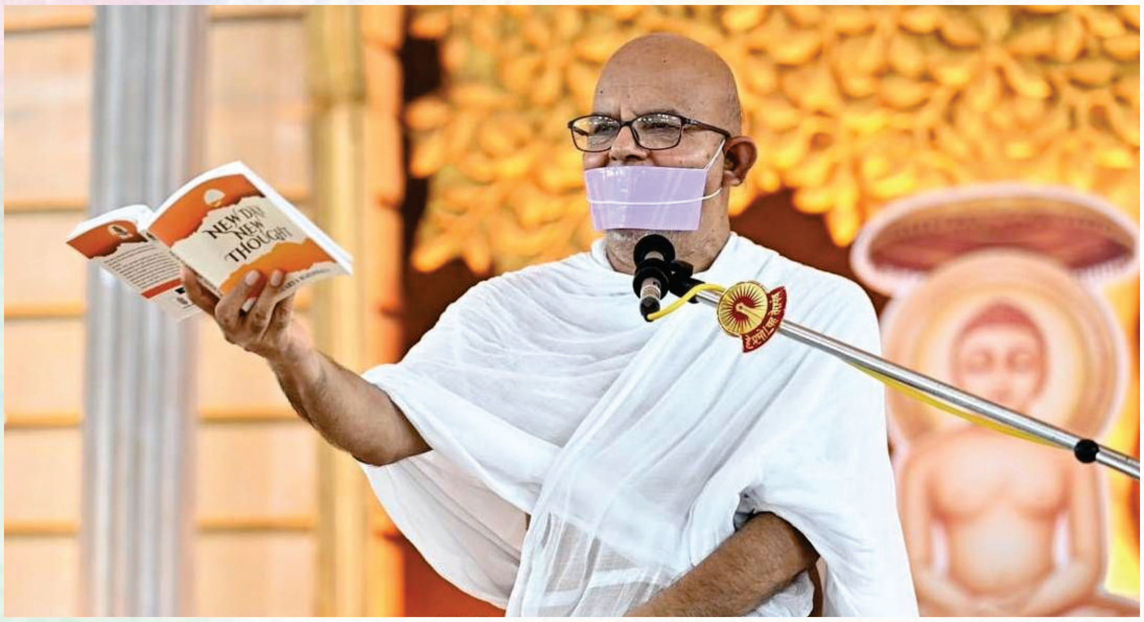

नंदनवन-मुंबई, २४ जुलाई, २०२३

चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जिनवाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में कहा गया है- प्रश्न किया गया कर्म प्रकृतियाँ कितनी प्रज्ञाप्त हैं। गौतम! आठ कर्म प्रकृतियाँ प्रज्ञाप्त हैं। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गौत्र और अंतराय कर्म। जैन दर्शन में एक सिद्धांत कर्मवाद है। अन्य शास्त्रों में भी कर्मवाद की बातें मिलती हैं। कर्म अपने आपमें सूक्ष्म पुद्‌गल होते हैं। हमारी आत्मा कोई प्रवृत्ति करती है, तो ये सूक्ष्म पुद्‌गल आत्मा के चिपक जाते हैं और अपने आप कार्य करते हैं।

जैसे हम सिर्फ भोजन करते हैं, पर बाकी सारी प्रवृत्तियाँ अपने आप होती हैं। इसी तरह कर्म अगला कार्य करते हैं, कब उदय में आएँगे, कितना समय लगेगा, क्या फल देंगे आदि। जैसे घड़ी अपने आप चलती है। हमने तो पहले सेट कर दिया। यह कर्मवाद का क्रम है।

जैन दर्शन ईश्वरीय शक्ति को नहीं मानता कि ईश्वर फल देगा। जैन दर्शन में कर्म अनुसार ही सब होता है। आत्मा ही कर्मों की कर्ता भोक्ता है और कार्य से मुक्त हो सकती है। कर्म इन अष्टकर्मों में चार घाति कर्म ज्ञानावरणी, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय ये आत्म गुणों का घात करने वाले हैं। शेष चार कर्म अघाती कर्म हैं। ये भौतिक फल देने वाले हैं। घाति कर्म आत्मा का नुकसान करने वाले हैं। अघाती कर्म बाह्य चीजें हैं। ये चारों कर्म शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के हो सकते हैं। ये बाह्य फल देते हैं।

चार घाती कर्म का आत्मा के साथ गहरा रिश्ता है। ज्ञानावरणीय ज्ञान को दर्शनावरणीय कर्म दर्शन को अंतराय कर्म शक्ति को और मोहनीय कर्म पाप लगाने वाले होते हैं। इन सबमें मोहनीय कर्म कर्मों का राजा है। आत्मा के पाप लगाने वाले हैं। शेष तीन कर्म पाप नहीं लगाते हैं, सिर्फ अपना फल देते हैं। इन आठ कर्मों से हमारा व्यक्तित्व इनके उदय और विलय से जुड़ा हुआ है।

विलय में उपशम, क्षय और क्षयोपशम होता है। अशम सिर्फ मोहनीय का, क्षय आठों कर्म का और क्षयोपशम ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय चारों का होता है। शुभ रूप में बंधने से पुण्य रूप में और अशुभ रूप में बंधने पाप रूप में फल मिलेगा। अघाती कर्म के उदय से दुःख और क्षय से आत्मिक सुख मिलता है।

कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि पूज्य कालूगणी के गोड़े में तकलीफ के साथ हाथ में भी व्रण हो गया है।

उदयपुर प्रवास का आषाढ़ सूदि तीज का दिन तय करवाते हैं और उदयपुर ठाट-बाट से पधार जाते हैं, उस प्रसंग की सुंदर व्याख्या की। उदयपुर के महाराणा को भी गुरुदेव के दर्शन का निवेदन किया जाता है।

कृष्णा सेमलानी, रेणु गुलियाव मीरा देवी ओस्तवाल, ललितादेवी मेहता, शांता देवी बाफना, सुनीता बोथरा व संतोष धोका ने तपस्या के पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कषायों को मंदतर बनाने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

नन्दनवन-मुम्बई, २८ जुलाई २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी का अमृत पान कराते हुए फरमाया कि भगवती आगम में कहा गया है- भन्ते! मोहनीय कर्म प्रयोग बन्ध किस कर्म के उदय से होता है। उत्तर दिया गया- तीव्र क्रोध, तीव्र मान, तीव्र माया एवं तीव्र लोभ मोहनीय कर्म प्रयोग बंध कराने वाले हैं।

मोहनीय कर्म को आठों कर्मों में सबसे मुख्य कहा गया है या कर्मों का सेनापति कहा गया है। सभी कर्मों के क्षय के अंत में मोहनीय कर्म समाप्त होता है। यह सम्यक्त्वी को मिथ्यात्वी और मिथात्वी को घोर पापी बना देता है। साधु को साधुपन से, श्रावक को श्रावकपन से च्युत करने वाला होता है। तीव्र का ही प्रयोग क्यों किया गया, सामान्य प्रयोग क्यों नहीं किया गया। तीव्र होने के पीछे एक बात हो सकती है कि दसवें गुणस्थान में सूक्ष्म लाभांश से मोहनीय कर्म का बन्ध नहीं होता है। सूक्ष्म कषाय से मोहनीय कर्म लगभग न बंधे पर हम तीव्रता से बचें। तीव्र कषाय में न आएं। अति क्रोध, मान, माया और लोभ से दूसरों का नुकसान न हो जाए। कषायमंदता रहे। कषायों के छह प्रकार- मंद, मंदतर, मंदतम, तथा तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम होते हैं। जहां तक संभव हो कषायों को तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम से बचते हुए मंद, मंदतम और मंदतर बनाने का प्रयास हो। हमारा सम्यक्त्व निर्मल रहे, ऐसी साधना चलती रहे।

अभ्यास से लाभ प्राप्त हो सकता है। समय पर गुस्से को भी पी जाएं। ज्यादा कषाय से समस्या पैदा हो सकती है। अवसर देखकर कोई बात का प्रयोग करें। कड़ा भी पात्र को देखकर कहना चाहिए। कषायों के परित्याग से आत्मा की निर्मलता के साथ-साथ परिवार और समाज भी अच्छे बन सकते हैं।

महामनीषी ने कालू यशोविलास का विवेचन कराते हुए उदयपुर दीक्षा महोत्सव के विरोधाभास के समय राणाजी के द्वारा पूज्य कालूगणी को दिए गए सहयोग एवं दीक्षा समारोह की भव्यता के प्रसंग को बताया।

पूज्यवर ने तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान कराए। रमेश खंडोर ने सिद्धि तप के अंतर्गत ५ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। वनीता सिंघवी, नीतू गेलड़ा, प्रतिभा सोनी, रिंकू डूंगरवाल एवं डालचंद कोठारी ने तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए मुनि दिनेशकुमारजी ने समता के महत्व को समझाया।

तनबल, वचनबल, मनोबल, धनबल, जनबल आदि अनेक प्रकार के बल होते हैं। जिसमें तेज है, वह बलवाल है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ कन्या मण्डल का त्रिदिवसीय १९वां राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन

"उजाला - बी द लाईट, स्प्रेड द लाईट" का हुआ भव्य आयोजन

कन्याएं उजाला प्राप्त कर उज्ज्वलता की ओर पथ प्रशस्त करती रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

**नंदनवन-मुंबई,
२५ जुलाई, २०२३**

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में आयोजित तेरापंथ कन्या मंडल के १९वें राष्ट्रीय अधिवेशन के तीसरे दिन समापन सत्र पर कन्याओं को परेणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि मनुष्य को अपने जीवन में कुछ बनने का लक्ष्य बना उसके अनुरूप चलने का प्रयास करना चाहिए। लक्ष्य ऐसा हो कि जीवन धन्य बन जाए। जीवन इसलिए जीएं कि हम पूर्व कर्म क्षय कर मोक्ष प्राप्त कर सकें। हमारे धर्मसंघ की कन्याओं में प्रतिभा भी देखने को मिलती है।

शिक्षा का विकास हो रहा है। उजाला ज्ञान से संबंधित होता है। उजाले की निष्पत्ति उज्ज्वलता में आए। कन्याएं उजाला प्राप्त कर उज्ज्वलता की ओर पथ प्रशस्त करती रहें। उज्ज्वलता के अनेक आयाम हैं। ईमानदारी, अचौर्य, अबोध, अमृषावाद, अनाग्रह की चेतना जीवन में हो। दिमाग संतुलित रहे, चित्त में प्रसन्नता बनी रहे। उजाला और उज्ज्वलता में निरंतर विकास होता रहे। आगे और ज्यादा धार्मिक-आध्यात्मिक विकास होता रहे।

परिषहों को जितने का प्रयास करे साधु

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुख्य प्रवचन के अंतर्गत पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के आठवें शतक में कहा गया है कि साधु जीवन में प्रतिकूल स्थितियाँ हो सकती हैं, तो अनुकूल स्थितियाँ भी आ सकती हैं। मानसिक- शारीरिक परिस्थितियाँ आ सकती हैं। साधु जीवन परमार्थ का मार्ग है, इसमें कठिनाइयाँ भी आ सकती हैं।

साधु जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती हैं, उन्हें २२ परिषह कहा गया है। साधु इन परिषहों पर जय पाए। प्रभावित या अस्थिरता न आए। निश्चय पर अटल रहे। आकुल-व्याकुल न हो। क्षुधा-शीत आदि २२ परिषह हैं। परिषह सहन के दो लक्ष्य हैं- मार्ग से अच्यवन और निर्जरा। इसलिए परिषहों को साधु जीते। कई परिषह शरीर से संबंधित हैं। भूख-प्यास सहन करने से सहज तपस्या हो जाती है। सर्दी-गर्मी रोग आदि भी शरीर से संबंधित परिषह है। गृहस्थों के जीवन में भी परिस्थितियाँ आ सकती हैं। परिस्थितियों को शांति से सहन करें, मनोबल बनाए रखें। चित्त प्रसन्न रहे। शरीर स्वस्थ रहे। चारित्रात्माओं को तो इन परिषहों को जीतने की विशेष साधना करनी चाहिए।

महामनीषी ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन करते हुए पूज्य कालूगणी के द्वारा उदयपुर के राणाजी को दिए गए उपदेश के संदर्भ को विस्तार से समझाया। सत्संगत से सम्यक्त्व प्राप्त हो सकता है। श्रावक अणुव्रतों को धारण करें। तेरापंथ के सिद्धांत को भी समझाते हैं। उपासक सुरेश बाफणा, सूरत ने ३१ की तपस्या, त्रिशला सेमलानी व नेहा विजयराज, पुष्पा कोठारी, सुनीता बोथरा, सुरेखा कावड़िया, नेहा मनीष, प्रेमलता बांठिया ने तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि शासनमाता ने कन्याओं को धरातल प्रदान करवाया था। अधिवेशन के अनेक रूपों को समझें। अपनी भावी योजनाओं का चित्रण, कन्या योजनाओं को पूरा कर कृतत्व को उजागर करें।

कन्या मंडल अधिवेशन के समापन सत्र 'उजाला डेस्टिनेशन' में मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सानिध्य में अधिवेशन का मंचीय उपक्रम रखा गया। तेरापंथ कन्या मण्डल की प्रभारी अर्चना भण्डारी ने कन्या मंडल प्रतिवेदन को कलात्मक विद्या से प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने अधिवेशन से संबंधित कार्यक्रम का संचालन करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। 'उजाला' के थीम गीत पर मुंबई की कन्याओं ने अपनी प्रस्तुति दी।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

(राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन की त्रिदिवसीय विस्तृत रिपोर्ट पढ़े पृष्ठ ८ पर)

मुनि श्री शांतिप्रियजी का संथारा पूर्वक देवलोकगमन

५५ दिनो का तिविहार एवं १ एक दिन के चोविहार कुल ५६ दिनो के संथारे के साथ मुनिश्री शांतिप्रियजी का भीलवाड़ा में देवलोकगमन हुआ। देवरिया के दीपचंदजी व अंबाबाई बोरदिया के प्रांगण में विक्रम सं १९९२ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को मुनिश्री शांतिप्रिय जी का जन्म हुआ। आपने गुजरात के डीसा शहर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और नीतिपूर्ण व्यवहार व सघन पुरुषार्थ ने आपको संपन्न बना दिया। डीसा में तेरापंथी परिवारों की भी वृद्धि में भी आपका योगदान रहा। आपने ४५ वर्ष पूर्व तेरापंथ सभा भवन के रूप मे एक मकान खरीदकर तेरापंथ की नींव को और मजबूती प्रदान की। तेरापंथ धर्मसंघ के समर्पित कार्यकर्ता के रूप में आप इस क्षेत्र में प्रख्यात थे। साधु साध्वियों के रास्ते की सेवा मे आप सदैव तत्पर रहते थे व प्रतिवर्ष पूज्य प्रवर की सेवा मे परिवार सहित एक डेढ़ महीना रहते थे। आपको तत्वज्ञान में कई थोकडे, गीतिका कंठस्थ थी। उपासक श्रेणी के प्रथम ग्रुप मे आप उपासक बनकर करीब ३० वर्षों तक उपासक के रूप में सेवाएं दी।

आपकी सेवाओं का मुल्यांकन करते हुए परम आपके मन मे वैराग्य के भाव जागृत हुए और पुज्यप्रवर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के श्री चरणो मे बार-बार विनम्रभाव से दीक्षा के लिए निवेदन करते रहते पूज्य प्रवर ने महत्ती कृपा कर वि सं २०६५ आषाढ़ शुक्ला १०, शनिवार को जयपुर मे ७२ वर्ष की अवस्था मे संयम रत्न प्रदान किया।

साधुजीवन के १५ वर्ष मे आपने सेवा और तपस्या को जीवन का अभिन्न अंग बना लिया पूर्ण जागरुक रहते हुए संयम का पालन करते रहे।

भीलवाड़ा चातुर्मास मे आप आचार्य श्री महाश्रमण जी साथ मे रहे। अवस्था के कारण आप भीलवाडा एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में मुनि श्री पारसकुमार जी के साथ विचरण करते रहे।

२७ मई २०२३ को आपने तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान कर लिया उच्च मनोबल और निर्मल भावधारा के साथ आपको ५५ दिनो का तिविहार एवं १ एक दिन के चोविहार के साथ कुल ५६ दिनो का संथारा २१ जुलाई २०२३ शुक्रवार सायं ०७:०० बजे पर संपन्न हुआ।

मुनिश्री पारसकुमारजी मुनिश्री पद्मकुमार जी एवं मुनिश्री सिद्धप्रज्ञ जी की अनुकरणीय सेवा प्रदान की।